CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding KS-MoE-Grant-2

गीता-संचिका

मूल, अन्वय, हिन्दी

(सटीक, सरल, सुबोध)

[illegible]

RaiGunj Nath Shukla Yatanger Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमद्भगवद्गीता-अनुष्ठान

श्रीमद्भगवद्गीता सुप्रसिद्ध धार्मिक—आध्यात्मिक ग्रन्थ है। यह साक्षात् भगवान्‌की दिव्य वाणी है। भगवान् श्रीशंकराचार्यजी, स्वामी श्रीरामानुजाचार्यजी, स्वामी श्रीनिम्बार्काचार्यजी तथा स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी प्रभृति सभी आचार्य महानुभावोंने इसको वेदान्तकी प्रस्थानत्रयीमें माना है और अपनी-अपनी अनुभूतिके अनुसार इसपर व्याख्या-टीका आदि प्रस्तुत की है। गीता मन्त्रमयी है। इसके दिव्य श्लोकोंके अनुष्ठान अमोघ फलप्रद हैं। उन अनुष्ठानके मन्त्रोंमेंसे कुछ सविधि नीचे लिखे जा रहे हैं। किन्हीं महानुभावने कहा है—

'यंत्र मंत्र सगुनौती जेती। गीता महँ जानौ सब तेती॥'

नीचे जो मन्त्र लिखे जाते हैं, उनमेंसे जिसका अनुष्ठान करना हो, उसके पहले तीन हजार जप कर ले—इससे वह सदाके लिये सिद्ध हो जाता है। फिर चाहे जब, चाहे जितनी बार उसका अनुष्ठान किया जा सकता है। अनुष्ठानमें साधककी धारणा, श्रद्धा और पवित्रता अपेक्षित है। साधक जितना ही अधिक श्रद्धावान् और पवित्र धारणायुक्त होगा, उतना ही शीघ्र या विलम्बसे उसे अनुभव होगा।

मन्त्र

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥ (२। ७)

मनमें किसी विषयका कोई प्रश्न हो या किसी सद्वस्तुको प्राप्त करनेकी आकाङ्क्षा हो तो उपर्युक्त श्लोकका—देवशयनी (आषाढ़ शुक्ल ११) एकादशीसे प्रारम्भकर देवोत्थानी (कार्तिक शुक्ल ११) एकादशीतक प्रत्येक एकादशीको रात्रिके समय पवित्र वस्त्र धारणकर तथा पवित्र आसनपर बैठकर मनमें श्रद्धायुक्त गुरुभावसे भगवान्‌का स्मरण करते हुए १०८ बार पाठ करे। ऐसा करनेपर किसीको भी एकादशीको स्वप्नमें भगवान् प्रकट होकर उसके प्रश्नका उत्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देंगे, साधन बतायेंगे या किसी ऐसे व्यक्तिका नाम बतायेंगे—जिसके पास जानेसे प्रश्नका उत्तर मिले या अभीष्टकी सिद्धि हो।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥(११।३६)

इस श्लोकके द्वारा जलको या विभूतिको अभिमन्त्रित करके पिला देनेसे भूत-प्रेत-बाधाका निवारण होता है। रोगीको देनेसे रोगनाश होता है। गौ आदि पशु किसी रोगसे पीड़ित हो तो एक लोटा जल इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके सानीके साथ मिलाकर या ऐसे ही पिला देनेसे पशु रोगमुक्त हो जाता है।

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥(११।३८)

इस श्लोकसे झाड़ देनेपर भी प्रेत-बाधाका निवारण होता है। कुशसे या नीमकी डालीसे झाड़ना चाहिये।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्त्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥(११।३९)

इस श्लोकके प्रतिदिन कम-से-कम १०८ बार जप करनेसे दरिद्रता दूर होती है।

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं-
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥(११।४०)

इस श्लोकके प्रतिदिन कम-से-कम १०८ बार जप करनेसे लक्ष्मीकी वृद्धि और कार्यकी सिद्धि होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।१।

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्।२।

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१४ — व्रत-पूर्णिमा

* * मंगल-स्मृति * *

परात्पर गुरु स्वामी भूमानन्द सरस्वती एवं परमेष्ठि गुरु अद्वैतानन्द सरस्वती तथा परम गुरु स्वामी राघवानन्द सरस्वती और पूज्यपाद गुरुदेव दण्डि स्वामी हंसानन्द सरस्वती की अहैतुकी परमकृपा से सनातन धर्म परम्परा और गौरव-गरिमा की रक्षा का मांगलिक कार्य वर्षपर्यन्त, विघ्न-बाधा रहित, सुख-शांति देनेवाला है।

पूज्यपाद जन नायक दण्डि स्वामी सहजानन्द सरस्वती जैसे युग-पुरुष की कृपा और गुरुदेव स्वामी हंसानन्द सरस्वती योगिवर्य की कृपा से यह मार्ग मिला है और उन निस्पृह संतों की कृपा से उनके संगठित आचरण से प्रेरित अनुप्राणित मैं लोकसंग्रह के कार्य में श्रद्धा-विश्वास के साथ लगा हूँ।

उनकी कृपा बनी रहे कि मैं निस्पृह सेवा में, भगवत्-अर्चा पूजा में लगा रहूँ।

गीता में भगवान की दिव्य-वाणी है:—→

"यतः प्रवृत्तिर्भूतानां, येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥"

"पवन-तनय संकट-हरण, मंगलमूरति रूप।—५८।४६।
राम-लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर-भूप॥"

ॐ तत् सत्

पौष शुक्ल १४, वि० सं० २०५५, शुक्रवार, 'खरनाम' संवत्सर, शक-सं० १९२०,
श्रीकृष्ण-सं० ५२२४, JAN.1.1999

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता।३।
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः।४।

सूर्यो० ६।४६, सूर्यो० ५।१५ — पूर्णिमा, माघस्नानारम्भ

दर्शन के लिये सत्य आत्मा बनता है। पार्थिव के लिये सत्य ईश्वर बनता है और [redacted] आचरण के लिये सत्य धर्म बनता है।

त्याग में ही जीवन का सच्चा आनंद है, जो मृत्यु में भी नष्ट नहीं होता।

जो भगवान्‌में मन लगाता है वही बुद्धिमान् है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः।५।
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।६।

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१५ आज वरुणा के मेरे अनाज शिष्य श्री नैपाल तिवारी, उनमें औरंगपुर के दामाद के साथ मठ में दो बजे अपराह्न पधारे और कुशल मंगल के बाद लालनजी की मान पर, निजी अभि साधना में लगाए गये।

विश्वास करो—माँके समान भगवान्‌की कृपा सर्वत्र हमारी रक्षा करेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते।७।
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः। अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च।८।

सूर्या० ६।४७, सूर्या० ५।१६ आज रैनवारी के श्री चन्द्रकेशराम, दारोगा, वाराणसी, मैलूपुर थानासे, सरकारी सेवासे अवकाश ग्रहण हो दर्शनार्थ आये। उन्होंने आदर सम्मान किया, श्रद्धा-विश्वास प्रदर्शित किया, पूजा किया, चित्रादि बनवाकर ले गये। पुनः संक्रांति के उपलक्ष्य उनके माता-पिताको लेकर दर्शनार्थ आयेंगे।

नामका सच्चा आश्रय लेकर निश्चिन्त हो जाओ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः। ९।
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्। १०।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१७ — संकष्ट श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

कामेश्वर प्रसाद शर्मा
पं० प्रेमचन्द यादव
C 39/285-16
बिन्दुपुर - वाराणसी

श्री० + पु०
श्रीतत्त्वर
शर्मा जी का
जि० दूसरा

[illegible]
[illegible] समिति से उत्तर
[illegible]
[illegible]
[illegible]

किसीके अहितमें कभी भी निमित्त मत बनो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः। भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि।११।
तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः। सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्।१२।

सूर्यो० ६।४७, सूर्यो० ५।१८

श्री नथुना पाण्डेय जी द्वारा दो कंतल फ्रांकी नर्च 300/-
सिमरी (बक्सर) के भक्तों द्वारा दी गयी दक्षिणा

रामपट्टी
श्री राजेश्वर पाण्डेय (दीक्षा लिये) 201/- + 1 कैलेंडर

बकुलहा पट्टी श्री

श्री रुद्रनारायण पाण्डेय		10/-
" गंगानारायण	"	55/-
" नमोनारायण	"	51/-
" दीनानाथ	"	10/-
" शिवकैलाश	"	82/-
" शिवनाथ	"	58/-
" राममोहन	"	120/-
" रामकैलाश	"	11/-
" रामयश	"	15/-

दुधीपट्टी

श्री ललन	शर्मा	75/-
" हरेराम	"	45
" रामविलास	"	51/-
" सुरेश्वर	"	101/- + 1 धोती
" रविनाथ	"	101/- + 1 "

रैकापट्टी
श्री बैजनाथ पाण्डेय के घर (दीक्षा) 183/- + बहुत कपड़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।१३।
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः।१४।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१९

ग्राम देउरिया के भक्तों से प्राप्त हुआ

श्री वंशरोपन सिंह	252/=
" राजेन्द्र सिंह	101/=
" दुखनाथ सिंह	51/=
" चारिदत्त सिंह	13/
" लालमोहर पाण्डेय	51/=
" शिवबल्लभ "	12/=
	420

ग्राम – बीरली द्वारा के भक्तों द्वारा

श्री दुखयाचन की पत्नी को दीक्षा संस्कार हुआ

दक्षिणा – 210/= – एक बेड सीट

श्री इन्द्रासन ठाकुर	112/=	श्री हरिहर ठाकुर	61/=
" हरिकृष्ण "	101/=	" रामप्रताप "	28/=
" पशुपति "	40/=	" कैलाश "	34/=
" रामदुलार "	57/50	" राजनारायण "	21/=
" वृंदावन "	11/=	" रामप्रवेश "	38/=
" रंजीत "	51/=		179/=
" शंकर "	88/=		467
" बंशी "	51/=		646/00
" रामधर "	20/=		

परोपकारकी न दूकान खोलो, न उसपर अभिमान करो।

467/=

Haj Guru Math Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।१९।
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः।२०।

सूर्यो० ६।४७, सूर्यो० ५।२१ आज मन्त्रा बाबू राम अरुण सिंह के श्रद्धापूर्ण अनुरोध पर जगतपुर गया जहाँ कॉलेज परिसर में जनकल्याण के लिये दवा वितरण का सेवाशिविर लगा था। वहाँ नौ बजे तक ठहरे रहा। श्री राजनेश शास्त्री पुत्र, अक्षयवट शास्त्री मरुई के राजचन्द्र शर्मा, नवी वाराणसी के श्री विश्वेश्वरी प्रसाद शर्मा, महापित्रेश्वर बीपुर के मलीसिंह, उदनादीह के मिथिलेश पाण्डेय तथा और भी बहुत से मित्र मिले। सर्वत्र कुशल मंगल, धार्मिक उत्सव आदि की बहुविध चर्चा होती रही। पाँच बजे साथ डा० इन्द्रजीत सिंह की कार से मठ में वापस आ गया।

पिताजी के छोटे भाई के पुत्र शिवशंकर के पौत्र को ले कर आये। उसका हाथ टूटा है। वे चिकित्सा की कोशिश आप से है। आज चिरंजीव आद तथा उसके बंधु हनुवा खोन से काफी मारपीट महसूस हुई। कफ का पूरा प्रकोप था।

अशिक्षित होनेकी अपेक्षा जन्म न लेना अधिक अच्छा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।

अर्जुन उवाच सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत। २१।

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्। कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे। २२।

सूर्यो० ६। ४७, सूर्यो० ५। २२ शील लाइरी रू क्रा किंजा भारी कष्ट है।

विपत्ति मनुष्यको बनाती है और सम्पत्ति राक्षसको।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्। उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति। २५।
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्।आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा। २६।

सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २३ — षट्तिला एकादशीव्रत

सिमरी से चन्द्रभूषण पाण्डेय, पं० रामनरेश पाण्डेय द्वारा भेजा गया गेहूँ, बजरंग आय, तीसी का आय, शुद्धजी आदि लोगों सम्मत सत्कार और श्रद्धापूर्वक पहुँचाकर वापस गये।

पं० रामनरेश पाण्डेय को एक दिन के लिये बीच में कलकत्ता और कलेक्टरी वाले कहकर बुलाया।

दो ही अक्षरका काम। उचारो श्रीराम-नाम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि। तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्। २७।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।
अर्जुन उवाच दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्। २८।

सूर्यो० ६।४७, सूर्यो० ५।२४ —— मकर-संक्रान्ति ——

प्रेमास कृष्ण को आए हैं। उनकी दया दृष्टि जब आदर के लिये दिए। वे खड़े भी सुमकर पूजा नहीं कर पाते। खड़े वेश्मा र आँखों में थोड़ी। किन्तु भाव क्या है? जो परिस्थिति है उसके साथ सामञ्जस्य बैठाना ही पड़ेगा।

भाग्यश्रीका जब उदय होना होता है, तभी संत मिलते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।२९।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।३०।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२५- मकर-संक्रान्तिजन्य पुण्यकाल (दोपहरतक), प्रदोषव्रत

आज खेत वारी के अधिकारी प्राप्त होंगे। चन्द्रदेव शरण-
उपमी माता तथा श्री विवाह राम की माता के साथ श्रद्धापूर्वक
दर्शनार्थ आये। कुशीजमंगल हुआ और पपाराजी
यात्रा पर स्नानार्थ गये। कहीं से भी विवाद वालिया
के सम्बन्धी को यहां - उनके वंश कमल कर्मराज में हस्तक्षेप
लगादि करेंगे। समय पर वे पुनः वापसी आकर
मिलते रहेंगे।

भाग्यको वही कोसते हैं जो कर्महीन होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव। न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे। ३१।
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च। किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा। ३२।

सूर्यो० ६। ४७, सूर्यो० ५। २६ [illegible] मेरुपुर [illegible] पास [illegible] वैद्य
भी [illegible] पढ़ते आये। उनके [illegible] श्रद्धेय
और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
को कहा। [illegible] भी [illegible] [illegible]
बताया। उन्हें [illegible] [illegible] दिये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च। त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च। ३३।
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः। मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा। ३४।

सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २६ — मौनी अमावास्या

आज रात को बादल और तेज हुआ है। पेंट की गड़बड़ी - शीत का प्रकोप आदि। पुरानी लकड़ियाँ तोड़ कर शीत के निवारण के लिये जलाई जाती है। उससे थोड़ी राहत होती है।

मनुष्यको धर्मसे कभी भी तृप्त नहीं होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन । अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते । ३५ ।
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः । ३६ ।

सूर्यो० ६ । ४७, सूर्यो० ५ । २७ — ईवीकौरव का विजय [illegible] का अन्त है। विजयी दल भी [illegible] का शैतिक दल कहाता है। पक्षों का निर्णय अभाव है।

राजगुरु नन्दाचल मिश्र के लेखों से लगता है जब ईवीकौरव विजय का युद्ध किया गया। उसमें [illegible] के साथी साथ थे। एक इस उसने उन्हें "[illegible] समाधि" [illegible] के मुख्य मन्त्री को लिये उन्हें प्रमोद के [illegible] दिया। दो [illegible] युद्ध-[illegible] के लिये उन्हें [illegible] प्रमोद के [illegible] आदि [illegible] के लिये सौंपा।

[illegible] कहने [illegible] भी [illegible] कटुवचन [illegible] "[illegible] का सामना करना पड़ता है।

[illegible] सेवाओं [illegible] उनकी [illegible] है। [illegible] साधु संत और [illegible] है। किसी [illegible] भुज-भुज [illegible] भी मिला है। यह [illegible] मिली है। किसी [illegible] लेख दो लेख पृष्ठों तक [illegible] लिखा जा सकेगा।

केवल एकान्त ही आधी समाधि है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्। स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव। ३७।
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः। कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्। ३८।

सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २७ "श्री त्रिशूल-सागर" पत्रिका - फरवरी

यों तो भगवान् शिव के अनेक नाम हैं लेकिन स्वयं भगवान् के शब्दों में:— " मेरा 'शिव' यह नाम उत्तमोत्तम है, वही परमब्रह्म है, एवं तारक है। इससे भिन्न कोई दूसरा तारक नहीं है। 'शिव' 'शि' तथा 'व' दो अक्षरों से बना है 'शि' का अर्थ है, पापों का नाश करने वाला तथा 'व' का अर्थ है मुक्ति देने वाला। इस प्रकार शिव स्मरण से पापों का नाश होकर मुक्ति प्राप्त होती है।

'शि' का दूसरा अर्थ है मंगल और 'व' का अर्थ है दाता। इस प्रकार शिव नाम का स्मरण मंगल प्रदाता है।

* * *

त्रिपुण्ड्र भी शिवभक्त के लिये आवश्यक है। त्रिपुण्ड में तीन रेखायें होती हैं। प्रत्येक रेखा नव नव देवताओं का प्रतिनिधित्व करती है। त्रिपुण्ड मंगलकारी है। संकल्प का प्रतीक है। काम के दहन का प्रतीक है। 'संकल्प' और 'काम' से मुक्ति 'धाम' के लिये आवश्यक है।

जैसा जिसका भाव हो, भगवान् वैसे ही हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः । स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ।४१।
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ।४२।

सूर्या० ६।४७, सूर्या० ५।२९

3 ... 10.99 को लिमरी बकुलहा पट्टी में
दीक्षा प्राप्त करने वाले शिष्यों के नाम

(1) श्री रामभूषण पाण्डेय पुत्र स्व० रामरूप पाण्डेय
(2) " चन्दु " " पुत्र श्री शिवनाथ पाण्डेय
(3) " प्रभाकर " " पुत्र श्री रामाशीष पाण्डेय
(4) " इन्दु " " पुत्र श्री मार्कण्डेय पाण्डेय

बकुलहा पट्टी से प्राप्त राशि 400/=

गर्भपात महापापसे दुगुना पाप है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान्।५।

सूर्यो० ६।४४, सूर्या० ५।३४ — जया एकादशीव्रत (स्मार्त)

आज जमशेदपुर के श्री दुर्गाप्रसाद शर्मी अध्यक्ष वाधूसर्मस आये। अकस्मात् दीक्षा ग्रहण के लिये तथा इच्छा आये थे। प्रेमी कुमार दीक्षित ने विधिवत् पूजा कराकर दीक्षादि प्रदान कराया। बड़ा (मंत्र) की दीक्षा दी गई। पश्चात् उनके पिता, चाची, पत्नी को पहले से ही दीक्षित हो चुकी थीं। सभी ने वस्त्र, थाली लोटा तथा पञ्चरत्न पूजादि का अर्पण, वापस गये।

मानसिक पूजा ही सर्वश्रेष्ठ पूजा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।७।

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३५ — प्रदोषव्रत

(१) 'धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' — (मनुस्मृति-२।१३)

(२) अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥ (महाभारत)

(३) आप्रा द्यावापृथ्वी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।
— (ऋग्वेद-१।११५।१; शुक्ल यजुर्वेद-७।४२)

(४) 'तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'
(— शुक्ल यजुर्वेद - ३१।१८)

(५) य इन् तद् विदुस्ते अमृतत्वमानशुः।
— (ऋग्वेद-१।१६४।३३;
अथर्ववेद-९।१०।१)

(६) पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिवे परे पुरुषे अर्पितं नि
— शुक्ल यजुर्वेद-२३।५२)

× (७) ~~यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति~~

(७) यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति॥
(— शुक्ल यजुर्वेद-४०।६)

(८) यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः॥
- (शु० यजु० ४०।७)

बहुत प्रश्न करना मूर्खताकी निशानी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तप । न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह। ९ ।
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः। १०।

सूर्यो० ६। ४३, सूर्या० ५। ३७ — पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त

आज संदेशविहारी तिवारी परीक्षार्थ पटना आये। विद्यालय में गंगास्नान किया - दर्शनपूजा - किया और तिलगुड़ का लड्डू एवं जाड़ा लगाये किया।

पाप प्रकटकर मानसिक भारसे मुक्ति पाइये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।११।
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः। न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्।१२।

सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।३८ आज प्रभात कुमार प्रभात, वैशाली एक्सप्रेस पुरुषोत्तम जोशी जी ने जो उनकी पत्नी का आदेश है यह बताया है। पत्नी में है बेमतलब: मुझमें है दुश्मनी के कारण।

x x x

एक बजे मालवीय चिकित्सालय में कोई आया विजय कुमार पुत्र का जिसके पिता श्री भगवान राम को शरीलाल ले गया। फलतः प्रभात उन लोगों की सुपुर्दगी में लगे। विजय का दोष नहीं है में पहले आया था सभी हालात बताया। प्रभात वहीं बजे रात को अंत्येष्टि करके लौटे और अपनी धर्मपत्नी तीन बच्चों सहित इलाहाबाद को कूच कर गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।१३।
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः। आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।१४।

सूर्यो० ६।४२, सूर्यो० ५।३८ शब्द की चार अवस्थाएँ मानी गयी हैं:—
(१) परा, (२) पश्यन्ती, (३) मध्यमा, (४) वैखरी।
(ऋग्वेद १।१६४।४५) में इसके विषय में इस प्रकार कहा गया है →
"चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति"।
अर्थात् वाणी के चार रूप होने से इन्हें ब्रह्मज्ञानी ही जानते हैं।
वाणी के तीन रूप गुप्त हैं, चौथा रूप शब्दमय वेद के रूप में लोगों में प्रचारित होता है।
सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्ञान को परावाक् कहते हैं। उसे ही वेद कहा गया है। इस वेदवाणी का साक्षात्कार महातपस्वी ऋषियों को होने से इसे 'पश्यन्ती' वाक् कहते हैं।
ज्ञानस्वरूप वेद का आविष्कार शब्दमय है। इस वाणी का स्थूल स्वरूप ही मध्यमा वाक् है।
इस वाणी के ये तीनों स्वरूप अत्यन्त रहस्यमय हैं।
चौथी वैखरी वाक् ही सामान्य लोगों की बोलचाल की है।
शतपथ ब्राह्मण तथा माण्डूक्योपनिषद् में कहा गया है कि वेदमन्त्र के प्रत्येक पद में, प्रत्येक शब्द में, प्रत्येक अक्षर में एक प्रकार का अद्भुत सामर्थ्य भरा हुआ है।
इस प्रकार की वेद वाणी ईश्वर-ईश्वरकार की निर्मिति है, यह निःशंक है।

—o—

संसारके यश और निन्दाकी कोई परवा न करके ईश्वर-पथमें चलना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति। १७।
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः। अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत। १८।

सूर्यो० ६।४१, सूर्या० ५।४०

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज सहसा जगमोहन राम प्रसाद गुप्त मन्त्री, मेरठ - क्रांती समाचार आ पहुँचे। उनसे बहुत से समाचार भी बातें हुईं। उनके आग्रह वश ही। लड़के लोग तुरन्त भी टिक नहीं रहने देते। पारिवारिक - इतने से उनके अवसर पर ये लोग आवश्यकता से अधिक बढ़ रहे हैं। चाचा मुजफ्फरपुर पिता यहाँ - सब मेरे सम्बन्धी को निमंत्रण कार्ड सहित भेजा।

घोड़ेजोड़ के भी जगन्नाथप्रसाद शर्मा - रायं हर्ष कार्यालय - रामरंग को भी पत्र एवं निमंत्रण भेजा।

बड़े कष्ट से मौखिक निमंत्रण - गणेश पाण्डे हुआ। उपाध्याय जीवनचन्द्र शास्त्री मौलवी, श्री कन्हैयाशर्मा, श्रीराम प्रसाद राय - बम्बा खीरिया रामगण राय को भी मेरे लिये लिफाफे में बंद किया - कल्लू घोड़ा जाँच।

इसी बीच चन्द्रभान शर्मा आगये। उन्हें पकड़ लिया पकड़ कर अधिकार किया -

वस्तुतः मनोमन्थन दावाग्नि समान के धमके आ रहे हैं। बहुत कहके कार्य चुप लेते हैं और कुछ विचार कर मेरे पास। पिता के निमित्त कौन सम्पत्ति वृद्धि का होना चाहिये। न भी विचार होगा। मुजफ्फरपुर उमा नंदकिशोर मिश्र, रायं विनोदप्रसाद सिंह को भी मौखिक निमंत्रण भेज दिया।

अगर दुःख नहीं चाहते हो तो सांसारिक सुख मत चाहो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्। उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।१९।
न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।२०।

सूर्यो० ६।४१, सूर्यो० ५।४१ आज भी प्रमोदकुमार जी आ सके। पंडित ग्रुप्रेश्वर शास्त्री को ब्राह्मण लिखकर आवश्यक - तथा खड्गधारी शास्त्री को पत्र पत्र कर्मों की प्रातः ७ बजे ट्रेन से बनारस भेजना उत्तरदायित्व है। उसके बनारसी आकर धर्मपुस्तक का जलूस तथा विद्यालय-निर्माण का और देखना। उन्हें नक्शा, प्रमोदकुमार के अनुसार पैसा देना है। यह हजारों उनके मन का पैसा प्रमोद के पास जमा है। प्रस्तुत दस दिन में कार्य सिद्ध करने की संभावना है। कागज-कार्य सभी प्रथम कोटि के हैं।

उनके नाम के पत्रालय तथा पत्रालय हरेराम से हमारे लेकर पंक्ति को सार्थक किया। हरेराम के पत्रालय के पत्र को लिखने की जरूरत नहीं है।

ब्राह्मण को पत्रालय तथा दिया - बीच पत्रों के बीच विशेष लिखने का। नवरात्र दर्शन - गिनाने का उन्हीं एक दिन। शेष भोजनालय आदि कुटकार्य। उनके एक व्यक्ति के साथ आ पहुँचे। इनका - अजित कुमार - माता प्रसादी - लिखाए हैं कुछ कमीशन मैंने इन्हें परिचय पत्र देकर संकेत कर दिया। पं. रामनरेश को अंग्रेजी - मोटिवेशन तथा एक कार्ड वाला पत्र लिखा।

जो आशाओंपर जीता है, वह फाके करके मरेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्। कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्। २१।
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। २२।

सूर्या० ६।४०, सूर्या० ५।४२ — आज सायंकाल पं० गुरुप्रसाद शर्मा वकील की माता से लौटे और आश्रम पर तेलआदि सामग्री पहुँचाने, आँधी की प्रगति तथा आगे कुशल क्षेम कहकर वहाँ का पत्र पहुँचाने का कृपाकर सुयोग।

सफाई-फोटोग्राफी-सफाई का काम चल रहा है। पं० डिनके जाकर सारी उपलब्धि किया-उनकी भक्ति-उनका श्रम सराहनीय है। मनोज मिश्रा का प्रकाशक पुस्तकालय की व्यवस्था में सहयोग एवं सामग्री पैकर अकार रंग रूप गृहीत रखा गया। मेरे सन्यासी शिष्यों की संख्या अत्यन्त सिमटती है। स्वामी हरिदर्शनानन्द एवं परमपूज्य शंकरानन्द की गुटबंदी और उनकी विकृती गतिविधि शोचनीय थी। समय के उन्मेष के बाधक है। वे संन्यास आश्रम की और धर्मशास्त्र की रक्षा करने में कारण समझे गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः । न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः । २३ ।
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च । नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः । २४ ।

सूर्यो० ६ । ३९, सूर्यो० ५ । ४२

अथर्ववेदीय गोपथ-ब्राह्मण :—

गोपथ ब्राह्मण की विशेषताएँ :—

३- इसमें ॐकार के विषय में जितनी व्याख्याएँ उपलब्ध होती हैं, उतनी व्याख्या अन्यत्र नहीं है। प्रत्येक शब्द में ॐकारोच्चारण का भेद (१।१।२५) प्रत्येक वेदमंत्र के उच्चारण से पूर्व ॐकार का उच्चारण (१।१।२८) करना चाहिये।

४- किसी अनुष्ठान के आरम्भ करने के पहले तीन बार आचमन करना चाहिये। (इसके लिये विशिष्ट मंत्र का संकेत है—१।१।३७)

५- ब्राह्मण को गाना और नाचना नहीं चाहिये, 'आगलाग्रीव' नहीं कहलाना चाहिये।

निर्वचन प्रक्रिया →

अन्य ब्राह्मणों की तरह गोपथ ब्राह्मण में भी शब्दों की निर्वचन प्रक्रिया अत्यन्त रोचक प्रतीत होती है। जैसे:—

१- यज्ञार्थक 'मख' शब्द की व्युत्पत्ति — 'घिदं वामित्युक्तं तस्य मेति प्रतिषेधः, मा मद्यं घिदं करिष्यतीति' (गो० ब्रा० २।२।५) 'घृत' का अर्थ घिद् है, इसका 'मा' शब्द के द्वारा निषेध किया गया है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि 'मख' में कोई अशुद्धि या भूल नहीं होनी चाहिये।

'रथ' — रथ शब्द की व्युत्पत्ति:— तं वा एतं रसं सन्तं रथं इत्याचक्षते (१।२।१०) रसपूर्ण अर्थात् आनंदमय होने से इसका नाम रथ हो गया।

दीक्षित शब्द की व्युत्पत्ति:— "श्रेष्ठां धियं क्षिपतीति दीक्षितः" (१।२।१०) श्रेष्ठ बुद्धि का निवास होने के कारण 'दीक्षित' कहलाता।

प्रीति ही जीवन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते । तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि । २५ ।
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् । तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि । २६ ।

सूर्यो० ६ । ३९, सूर्यो० ५ । ४३ — श्रीजानकी-जयन्ती

आज सहसा बेदुपुर के मिथिले राजकुमार राय हुल्लाश्वाद से लौटकर भेंटकर्ते एवं साहेब साब के आ पहुँचे। वे प्रमोदकुमार से वहां भेजने, वंशमाधव के डेरे पर जाने पे पट दोनों भाई भोजमात की तैयारी में कहीं बाहर थे। वे सुश्री अमाकूणि से मिलकर लौट आये।

उनसे पता लगा कि बुधवार को वहां मौजलीपक्का है। उसके बाद प्रमोद का वो लौटेंगे। यही रवैया कभी काल अस्त होई। किन्तु मन को समझाकर शांत रखना है। मायत्प्रेणा से सब कुछ होता है।

जाहि विधि राखे राम ताही विधि रहिये को लीकार करना ही बुद्धिमानी है।

यहां न पैसे न दवा न पकाना मानिसंकपक्ष भेजने के लिये कोई प्रबंध साधन।

"व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेनेति व्याकरणम्"

× × ×

डरना और डराना दोनों पाप है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि। २७।
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत। अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना। २८।

सूर्यो० ६।३८, सूर्या० ५।४३ — भगवान्‌की कृपा हमारे अंदर प्रेम और विश्वास का संचार करती है। जिस पर भगवान की कृपा होती है, वह कदापि श्री हीन नहीं होता। प्रतिष्ठा पाने के बाद हम अतिथियों का सम्मान करना भूल गये हैं। दूसरों से सम्मान की इच्छा रखते हैं पर दूसरों का सम्मान करना नहीं चाहते। पुण्य प्रजन्म फलवान होता है तो मंगल नहीं मुरझाया होता है। अफसोस तो मुर्दों में होती है। संन्यास लादा नहीं जाता, संन्यास तो स्वयं हृदय से प्रस्फुटित होता है।

मूल एक बार होती है, बार बार मूल किया जाना अपराध है और बार बार अपराध किया जाना भी पाप है।

ब्राह्मण को भावुक नहीं बनना चाहिये। इससे उसकी प्रतिष्ठा धूमिल होती है।

भगवान की लीलाएं हमें अपने कर्तव्य की ओर इंगित करती हैं। हमें दूसरों के वैभव और ऐश्वर्य को नहीं देखना चाहिये। अच्छा होता हम मानवता और भाईचारे का सम्मान करना सीखते। यह मनुष्य का जन्म अदालत है। कर्मों के अनुसार शरीर दिया गया है। कर्मों का फैसला और कहीं नहीं, स्वयं मन ही होगा। चौरासी लाख योनियों के दुर्गों से मुक्ति पाने का एक ही द्वार है, मनुष्य देह। गीता: महाभारत शान्तिपर्व में कहा गया है "गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्" के मर्म को समझें।

डा० श्रीगोविन्दनाथ शर्मा को श्रीदुर्गाकवच के पाठ पर मानवी का विवरणपत्र दिया गया।

जो सदा संतुष्ट है, वह यथार्थ धनी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः। आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्।२९।
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत। तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।३०।

सूर्यो० ६।३७, सूर्यो० ५।४४ प्रयाग से श्री प्रमोद कुमार का फोन पाकर नारायण एवं हरेराम राम-नरेन्द्रनगर में पुनोत्सव का मौज सफल बनाने में शामिल होने गये। कैसी बुद्धिमानी की विडम्बना है। कैसा स्वार्थी संसार है! मैं सब प्रकार से लाचार हूँ। मुझे बलपूर्वक सहन करके रहना होगा। भगवान की अहैतुकी कृपा प्रेरणा होगी तो सुन्दर ही सम्पन्न होगा। पंच गुरुवार शर्मा शर्त के पश्चात सहयोग मिलेंगे। पेशाबीय दृष्टि का रजिस्ट्रेशन से जाप अधिकार प्रमोदकुमार को सौंप दूँ। उन्हें क्रमशः बनाकर स्वामी ओङ्कारानन्द सरस्वती शीघ्र संस्थान रूपी भाजपुरी प्रकाशन संस्थान का सर्वाधिकार एवं भार दे दूँ। कोई रक्षा सहायी व्यवस्था प्रकाश कर्मसे मनाई भी अधिक इच्छा है।

सत्संग भवन की पुरुष अलग वाली आरक्षा आगे का पेंट हो रहा है कि सर्दी का पानी का प्रभाव न पड़े पुरुषों जुड़ा रहे। धीरेलाल दफ्ती को देकर 50 पुरुषों की मजदूर का ठेका होगा। पुरुष प्रत्येक के पैसे कल आज दे देंगे। प्रमोद के प्रयास से अनेक व्यवस्था की जायेगी।

जो दिन आज है, वह कल नहीं रहेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि। धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते। ३१।
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्। सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्। ३२।

सूर्या० ६। ३६, सूर्या० ५। ४५ हनुमान् जी जब अशोक वाटिका में सीताजी को ढूंढते हुए पहुँचे और अशोक वृक्ष पर छिपकर बैठे, तब बजाय रिल्के बाद उन्हें लंका निवासी वेदपाठी विद्वानों की वेदध्वनि सुनाई पड़ी।

"ऋग्वेदविदुषां क्रतुप्रवरयाजिनाम्।
शुश्राव वदतां घोषान् स विभेजे ब्रह्मरक्षसाम्॥"

(वाल्मीकि रामा० ५।१।२)

× × ×

हनुमान जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान्, निष्णात पंडित थे। जब वे किष्किन्धा में भगवान् राम से बातें करते हैं, तब श्री रामजी लक्ष्मण जी से कहते हैं: →

"तमब्रवीत् सौमित्रे सुग्रीव सचिवं कपिम्।
वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तमरिंदम॥
नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्॥
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहुव्याहरतानेन न किञ्चिदपशब्दितम्॥
न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा।
अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित्॥"

लक्ष्मण! इन शब्दों को सुनो — (वा० रा० ४।३।२७-३०)

सुग्रीव सचिव कपिवर हनुमान् से, जो बातों के मर्म को समझनेवाले हैं, तुम स्नेहपूर्वक मीठी वाणी में बातचीत करो। जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली है, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया, तथा जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में बातचीत नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है, क्योंकि बहुत सी बातें बोलने पर भी इनके मुँह से कोई अशुद्धि नहीं निकली।

रूपको देखनेमात्रसे ही जहर चढ़ जाता है। तू रूप-लालसा छोड़ दे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि। ३३।
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्। सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। ३४।

सूर्यो० ६।३६, सूर्या० ५।४६ — विजया एकादशीव्रत

→ सम्भाषण के समय मुख, ललाट, भौंह तथा अन्य सब अंगों से भी कोई दोष प्रकट हुआ हो, ऐसा कहीं ज्ञात नहीं हुआ। → (कल्याण- वेद-कथाअंक पृ० ३०:३१ से)

घमण्डसे आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः । येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् । ३५ ।
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः । निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् । ३६ ।

सूर्यो० ६ । ३५, सूर्या० ५ । ४६ —— शनिप्रदोष ——

वरपा के राजमंत्री विवारी की धर्मपत्नी, छोटा पुत्र सुदेव विवारी, तथा श्री दयाशंकर-पूर्व-रोडवेज-कर्मचारी, और बनारसी विवारी की पुत्र वधू, पुत्र एवं उनके लिए भी सभी दुर्गा श्रद्धालु, विनम्र और संत-सेवक हैं। धर्म में सभी की पूरी आस्था है। अन्तः विचार सराहनीय हैं।

सत्य भी गलत ढंगसे कहनेपर झूठ हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।३७।
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ। ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।३८।

सूर्यो० ६।३५, सूर्यो० ५।४७ — महाशिवरात्रिव्रत

आज बक्सर के श्री स्वामी सहजानंद सरस्वती-आश्रम में आसपास की शांति-समाज वैदिक रीति से पूजा-अर्चा के साथ दस फाल्गुन महापर्व पर पूज्य पाद स्वामी जी की जयंती मनाई गई। श्री गंगाजी हा राष्ट्र-रक्षा वाहिनी के कार्यकर्ता राष्ट्र पति धारण शौर्य चक्र प्राप्त सेना के अवकाश प्राप्त कैप्टन जयदेव के अध्यक्ष रहे तथा श्री स्वामीनाथ विद्यार्थी प्रकाशित पत्रिका ने शुभारंभ उपस्थित कार्य संपन्न किया। प्रमुख वक्ताओं में शांतिराम आचार्य, पुरुषोत्तम के दो कुल पुरोहित पत्नी श्री पांडेय रहे।

वार्ता तथा प्रमोद कुमार दीक्षित आदि थे। दिल्ली से पूर्वांचल संघर्ष समिति के नेतृत्व किया समारोह में उपस्थित रहा। पत्रकार प्रो० दीनानाथ तक नहीं पहुंच सके। वक्ताओं के संबोधन दिनभर चलते रहे तथा अनेक कुछ लोग उपस्थित थे। पश्चात संन्यासियों की विदाई स्वामी हरिहरानंद जी महाराज के आशीर्वाद से संपन्न हुआ।

आरा से श्री गुरुकृपा पंडित कमेश राजपुर के श्रीकृष्ण एवं बेरीपुर के राजेन्द्र शर्मा पहुंचे। समारोह सफल रहा। रंगोली प्रोफेसर ने पाइका उपस्थित रहे। ज्ञानचन्द्र राय, पांडे वीर, ने अनेक शिक्षार्थी फलीभूत हुए का प्रेम पूर्ण योगदान किया। स्वामी दिवाकर जी ने अपनी नागपुर से भी सहयोग लाया। चौधरी रंग मुखिया और ठी भी सम्मिलित होकर शामिल हुए। राष्ट्र कल्याण की राष्ट्रशक्ति शक्ति पंच राष्ट्र खोजी रक्षा-वीर बजरंगी हिन्दी तथा काशी से पधारकर सेवाकार्य पहुंचे। खोवारी से पं० जीवन पांडेय रहे। शास्त्री भी अध्यक्ष रहे। निरंकार

स्वार्थके लिये भगवान्‌की कीर्तिको नष्ट न करो।

पांडेयपुरा आश्रम उसे पश्चात कमल में 300 तथा दिन श्रोताओं के पधारने पर श्री पद्मरामशर्मा मंडई चेतना

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि। ३९।
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। ४०।

सूर्या० ६। ३४, सूर्या० ५। ४८ — श्रमजीवी फैले चलकर काशी-अखाड़े में आ गये। कुछ जन तथा प्रसाद सामग्री भी साथ आयी।

इस के आश्रम में पैर फिसलने से गोडा टूटे। उसकी भारी चोट से मृत्यु कष्ट में पड़ी है। कलकत्ता जाने में पिता के राजमोहन-अधिकार सम्बन्धी प्रयत्न। दूसरी ओर वृन्दावन के श्री राधाप्रसाद शास्त्री के साथ मिलने के मेरे विचार श्री विष्णुमिश्र भी अच्छा समझते रहे। अतएव पहले श्रीमिश्र मिलने का प्रबन्ध भी हुआ। आगे-लेखन भाग-लेखन-वापस गये।

काशी पहुँचे तो वृन्दावन के सुरेन्द्रनाथ-अभिनेता सपरिवार विजय की पत्नी कुछ वालकों का पहुँचे। विजय के छोटे पुत्र का — 'मन्त्रवीर' स्कूल में नामाङ्कन कराने के कार्यक्रम और उसकी व्यवस्था में।

जलमें डूबा बच सकता है पर विषयोंमें डूबा नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन। बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।४१।
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः। वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।४२।

सूर्यो० ६।३३, सूर्यो० ५।४९ — अमावास्या

आज अमरेश पुत्र देवेन्द्रनाथ राय उपनयनादि संस्कार कर्तव्य था। सभी ऊपर सदस्यों के साथ वसुपुर वाराणसी गया। उनके के इसे सप्ताह में काशी पधारकर पुत्र को स्कूल में भर्ती में दाखिल करेंगे। दो सौ रुपया दे गये। मनोरमा पत्नी को 400. एक सौ तीन रुपया [illegible] गहनों के लेने के लिये दे छुटकारा दिये, बाकी में उनका नाम मण्डल वाली दिया गया। पैसे देने के क्रम में [illegible] इसे लगता है। देवराज नारायण दोनों मेरे परिवार के चतु है।

सिमरी के चन्द्रधर के पत्रिका का एक सुपुत्र डा० स्वामी नाथ त्रिपाठी का संदेशात्मक किसी प्रकार से [illegible] स्वामी जी का एकाध प्रकाशन का व्याख्यान प्रारम्भ उसकी प्रतिलिपि के लिये। किन्तु समय पाकर थोड़ी पुस्तिका नहीं मिल सकी।

प्रेममें जो तन्मय हो जाते हैं उन्हींका प्रेम—प्रेम है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्। क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्। व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।४४।

सूर्यो० ६।३२, सूर्यो० ५।४९ — श्रीलङ्कानिवासी धार्मिक [illegible] एक मार्मिक पत्र लिखकर बद्रीनाथ आश्रम के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिये प्रेरित किया। मैंने सर्वदेशीय राम-मंगलेश्वर-अभिनवानन्द-चरितमानस, राजनीतिक परिषद के पास भी एक मार्मिक पत्र लिखकर कुछ सान्त्वना प्रदान किया तथा श्रीचक्रधरिवार मंगलेश्वरी गादी लिखने की परिकल्पना से परिचित कराया तथा उनके नामी- अखिल कुमार "प्रेमा"- द्वारा गन्धमादन लिखाया। वाराणसी वास उक्त कार्यों को सफल बनाने में भोगवान के लिये भी लिखा। प्रभो दक्षिणा के साथ भी दया अड्डे २ पत्रकार की। कानपुर आश्रम के लिये- इनका पीछा मुझे खल रहा है। मैंने इधर नहीं कराया- डा० की शादी हुई। गाड़ी इधर कर्मि भी व्यय किया और रहस्य कराकर इसको लिखि मुकदमा और किड्डी किया सुनकी बड़ी मिट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।४५।
यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके। तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।४६।

सूर्यो० ६।३१, सूर्या० ५।५० [illegible] पत्र डाकमें छोड़ा गया। आज मुजफ्फरपुर के पटने डा० चन्द्रशेखर मिश्रके एक दोस्तकाई न्यायालयीतर्क "महाविद्वान" के रूपमें मिला।

श्री प्राध्यापक कमलाकान्त हरिदत्त जी "दर्शनविद्याप्रवीण" द्वारा डाकके संबंधमें मिला।

"जेहल कठ सदी प्रकाशके उपनिषद्-प्रकाश के लिये, वहुत मिलन हो गया कदा आदि देखकर प्रसन्नता हुई कलेजा के बहुत नाजुक हुए और वोल्यिलवेदमार नाजुक हो गया कहीं वाहर निकलने के लेशमें नहीं पा-सका आपकी कृपा शीघ्र किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।४७।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय। सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।४८।

सूर्यो० ६।३०, सूर्या० ५।५० आज भी चन्द्रकेश्वर एवं उनके दो पुत्रों के आगमन की प्रतीक्षा का कारण कोई नहीं आया। प्रमोदकुमार [illegible] बहुत अस्वस्थ हैं। कोई कार्य आगे नहीं बढ़ सका। सदस्यों को [illegible] का सामना करना पड़ता है। स्वामीनाथ तिवारी का बराबर फोन आता है। उकलन-किशोरसमेलन के स्वामीजी "ब्रजमण्डल के माधव की प्रति" के लिये यहां सभी उत्कण्ठित हैं। कुछ मिल नहीं पाता। मैं क्या करूँ? विचार किया प्रमोद हष्ट होकर - कपड़ा लत्ता समेट - जाने की चलने से मुझे फल इस कलेक्ट मिलता कोई पत्र किसी [illegible] शान्त हुए। मैं उनके सर्वविध कल्याणार्थ लगा हूँ। [illegible] शक्ति - सदा सर्वदा [illegible] शक्ति मांग रहा हूँ - दूसरा क्या करूँ? मेरी अभिलाषा [illegible] वह एकमात्र ईश्वर एवं महापुरुष - पादपद्मों के पास है।

* * *

सहरसा का बूढ़ा - ठाकुर सौ दो वर्ष पूर्व - अपने प्रपौत्र के विवाह में काशी आया था और वहीं सत्संग के नाम पर "बतबूढ़" करता रहा - वह आज भी किसी सज्जन के विवाह में - न्यौते पर आया है और सुबह में किसी अपने व्यक्ति से [illegible] के सरहटों जो सहरसा में शिक्षा रहा है, क्रम: सत्संग के लिये पधारा। यहां सत्संग के नाम पर केवल महोत्सव है। खूब पढ़ाई भजन - स्व० रामजी मीर रचित। एक वर्ष पूर्व पत्नी के देहान्त की चर्चा चलाकर - कुहासि "रितता" [illegible] उनकी उम्र ७० वर्ष बताया। यहां पोथी पढ़ने और सत्संग के इच्छुक व्यक्तियों की हालत है। बिना कहे बिना भोजन के बाद - तीन साथी [illegible] - तखाड़ी से भोजन किया। [illegible] शान्ति से। यथाकदा मनोरथ और हताश हो जाता है।

मनकी शान्ति ही स्वस्थताका लक्षण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय। बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः।४९।
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।५०।

सूर्या० ६।२९, सूर्या० ५।५१ आज डा० लक्ष्मीनारायण तिवारी, अम्बुजा डा० उदयनारायण तिवारी के सुपुत्र चिरंजीव- के पुत्र के विवाह के उपलक्ष में प्रीतिभोज एवं आशीर्वाद समारोह में बहुनाथा के सपरिवार चक्रेश्वर जी इसमें शामिल होने के पाठ है पहुँचकर सम्मिलित हुआ।

काशी के बहुत से मूर्धन्य विद्वान जो नेटवर्क विद्वत्परिषद से संबंधित हैं पधारे हैं। इसके अलावा मैं भी काशी के भी गणमान्य लोग। श्री कृष्णपति पाण्डेय वाचस्पति, वाक्विलास कनौजिया, वेदेश्वर कुलपति गाठ मंडनमिश्र, वर्मा- श्री रामरक्षा के पुत्र, प्राकृतिक विभाग के उपाध्यक्ष मारिकण्डेयजी आदि उपस्थित होकर मिले। सबों से परिचय संपर्क हुआ। पंडित पर्व वेंकटरमण बड़े विनम्र, सौम्य व्यक्ति और वैदग्धिक चमत्कार वाले दीख पड़े। १० बजे वहाँ से लौटकर मठ में विश्राम किया।

पर-स्त्रीमें मातृभाव अथवा भगवद्भाव करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः । जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ।५१।
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति । तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ।५२।

सूर्या० ६।२८, सूर्या० ५।५२ — आज घोर कलि पतरी मध्याह्न में आपि, उन्हें भोजपुरी कथा पोथी "जैहल कड सनदि" के मुद्रण के क्रम में दो हजार रुपये दिये गये। इस प्रकार कुल दस हजार अब तक दिये जा चुके। आज डा० रुद्रदेव मिश्र, मुजफ्फरपुर, अ० सत्यनारायण पाराऊपन खरियमी एवं श्रीचन्द्रदीपराय-वगैरा-सुपात्रों को आदरणीय रामभक्त पत्र लिखा-कल छोड़ा जायेगा। ✕ ✕ ✕

२

राजनाथ तिवारी के इकलौते पुत्र देवेन्द्र तिवारी जो पहले डालमिया राजा के निकट किसी प्राइवेट औद्योगिक कंपनी में काम करते थे, पुनः वहां से मुक्त हो अपने घर पटना में पास करने के क्रम में अपना ठहरे-घरबार सम्भाल लिया। उनका छोटा पुत्र बड़ा खुराफाती है। मारपीट, छिनैती के खूबार अपराधों में के साथ जेल में दो बार इधर-उधर घूमने के बाद आया है।
देवेन्द्र का कोई लड़का सयाना है। आजमगढ़ में पढ़ता-रहता है। इनके परिवार के भाई-बहन आदि बड़े नम्र, शिक्षा में अग्रगण्य रहे हैं। एक पिता के विपुल लक्ष्मी हैं। इनके गुणशील-अर्थात् भी परम्परागत सांस्कृतिक अनुभूति प्रशस्त है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला। समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि।५३।

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव। स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्।५४।

सूर्यो० ६।२८, सूर्यो० ५।५३ ~~आज आर० पी० सिंह, रेडक्रोस, पुणे के पूज्य स्वामी जी के चित्र की प्रतिकृति तथा "प्राइवेट ट्रस्ट" के प्रस्ताव पर मसविदे के संबंध में अनुरोधपत्र लिखा जो कल डाक में डाला जायेगा। श्री लालनेश्वर प्रसाद राय - ओमशिव।~~

~~कुछ पत्राएं आयीं। शास्त्रिजी के निकट की डायरी परिशिष्ट दे दूंगा।~~

~~श्री चन्द्रेश्वर राय - मंत्र: अखिल कला राय - भला प्रकृति - सिद्धान्त के सम्मान जनक व्यवहार के फलस्वरूप न जाने में जिज्ञासा करोड़ी - दीक्षा की भी भोजन के अनुरूप ऊँचा। आज पोस्टकार्ड मंगाया - कई लोकोपकार लिखने को मंशा है।~~

× × ×

आत्म-साधना का मूलोद्देश्य आत्मनिर्माण है। जीवन की सारी समस्याओं का उलझना सुलझना, बहुत कुछ मनुष्य की आंतरिक स्थिति पर निर्भर रहता है। जिनने अपनी अन्तःकरण को सुसंस्कृत करने की साधना नहीं की, जिनके मन में केवल पाशविक संस्कार ही भरे पड़े हैं, उसके लिए परमात्मा की पुनीत कृति यह दुनियाँ, दुर्गंध भरे कुछ जलते रेगिस्तान के अतिरिक्त कुछ नहीं।

भौतिक सम्पदाएँ काफी झंझट बढ़ा सकती हैं, जिम्मेदारियों और चिन्ताओं के बोझ से लाद सकती हैं, थकान और मुरझाहट दे सकती हैं। पर प्रगति और संतोष के रास्ते, कला गर की दृष्टि से नहीं होंगी।

आत्मनिर्माण की वैज्ञानिक पद्धति-व्यवस्था का काम ही साधना है। आत्मनिर्माण का कोई कारखाना या कार्यालय से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

× × ×

बहुज्ञ होनेका दम न भरो, प्रत्युत अपनी अज्ञानताको मान लो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।५५।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।

सूर्यो० ६।२७, सूर्या० ५।५३

होलाष्टकारम्भ

आज राजेन्द्रप्रसाद सिंह - संवर्द्धक पत्र छोड़ गया। आज पत्रों के मंत्री श्री० रामतपस्या शर्मा को बहाई मक्का - राष्ट्रमंगल उत्सव के पत्रिका के पते पर पत्र भेजा। श्री चक्रधरानन्द - रेलवे टेलीग्राम दिया। दोनों पत्र लिफाफे में। कृष्णानन्द शर्मा को गांधीजी का फोटो, बोलिंग रेलवे के पते पर पत्र भेजा, रक्षा सिंह से चित्र की प्रति भी मांगा। अतः बनारस के लोक के पते पर श्रीकृष्णकुमार शर्मा देवरिया को पत्र लिखा - उनके कार्यालय० में आमंत्रण पत्र भेजने की भी मार्मिक पत्र लिखा। शीघ्र चक्रधरिचूर्णिका हल्ला मेगापागया। सिमरी के मंत्री श्री राजकेश पाराशर को भी पत्र लिखा। अपने पूर्व प्रबन्धक श्री उमाशंकर राय को भी एक पत्र कार्यालय फैलाने के लिये प्रेरित किया - सहयोगार्थ विनम्रता के साथ।

अपनी बुद्धि के बल से ही मनुष्य ने अपने वर्तमान स्तर को ऊँचा किया है, और अपनी बुद्धि के बल से ही मनुष्य अपनी इच्छा को अनुसार जो चाहता है, वह प्राप्त कर लेता है। यह मनुष्य की बुद्धि का ही बल है कि वह इसके बल से केवल एक देश का नहीं अपितु करोड़ों व्यक्ति का सम्राट बनने की क्षमता रखता है। मनुष्य ने अपनी इसी बुद्धि के बल पर जो चाहा, वह पाया और इसी के बल से जो बनना चाहा वैसा किया।

मनुष्य की बुद्धि इसके लिये बहुत बड़ी निधि है।

अपनी बुद्धि के कारण से विचलित न होकर विवेक का आश्रय लिये रहें और उसके फल स्वरूप से विचलित न हो। यह मनुष्य के लिये अति आवश्यक है।

भगवान्के चिन्तनमें सुखकी, तृप्तिकी खोज करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्। नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५७।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५८।

सूर्यो० ६।२७, सूर्या० ५।५४

"भारत व्यपदेशेन ह्यात्मा कार्यश्च दर्शितः"
— श्रीमद्भागवत ११।८।२२)

अर्थात् महाभारत जिसे 'ज्ञानरूपप्रदीप' कहा गया है, इसका अनुभव है कि उसके संबंध में स्वयं महाभारत में कहा गया है:—
(आदिपर्व ६२।३३):—

"धर्मशास्त्रमिदं पुण्यमर्थशास्त्रमिदं परम्।
धर्मशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामितबुद्धिना।

* * *

आत्म-विश्वाससे धैर्य उत्पन्न होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः। रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।५९।
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।६०।

सूर्यो० ६।२६, सूर्यो० ५।५५

श्रीमद्भागवत् (१०।४।४१) में ऐसा भी वर्णित है:

"विप्रा गावश्च वेदाश्च तपः सत्यं दमः शमः।
श्रद्धा दया तितिक्षा च क्रतवश्च हरेस्तनूः ॥"

अर्थात् वेद्ज्ञ (सदाचारी भी) ब्राह्मण, दुधारू गाय, वेद, तप, सत्य, दम, शम, श्रद्धा, दया, सहनशीलता, और यज्ञ ये श्री हरि (परमेश्वर) के स्वरूप हैं।

वास्तवमें बड़ा वह है जो उदारतामें बड़ा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः । वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता । ६१ ।
ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते । ६२ ।

सूर्यो० ६ । २५, सूर्या० ५ । ५६ — आमलकी एकादशीव्रत

शीतल महाराज का पुरुला - झाड़ा... औ नमिता चक्रमें लुप्त हो रहा है।

मानवाधिकार - संघ में, विहार में राष्ट्रपति शासन की संस्तुति करने में विलम्ब हो रहा है। यह अध्यादेश अवैधानिक व्यापक चोट है। सरकारी कदम है।

इच्छापर विचारका शासन होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति । ६३ ।
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् । आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति । ६४ ।

सूर्यो० ६ । २४, सूर्यो० ५ । ५६ — शनिप्रदोष

आज बहुत दिनों के बाद रेलवे कॉलोनी के वरिष्ठ अधिकारी श्री तारकेश्वर शुक्ल सायंकाल पधारे थे कि उनके पिता दिवंगत हो गये और वे विगत बारह-तेरह दिनों से अपने घर पर ही पिता की अंत्येष्टि आदि में व्यस्त रहे थे। वे परम दैवी श्रद्धालु भक्त और उच्च दर्जे के धर्मनिष्ठ साधक हैं। उदार मना हैं।

* पण्डह-नीलगा के श्री जनार्दन राय जो जनडीहा मूल के कश्यप-गोत्रीय ब्राह्मण हैं। यहां मयूरगंज में व्यवसाय रखे हैं। इनका नवादा के अच्छामीयां उनके घर में भी हैं। इन्होंने लोकाड़ी-किसी कश्यप-गोत्रीय किनवार मूल के ब्राह्मण के यहां विवाह तय किया है। राम-राम के लिये आये थे कि विवाह में चल और प्रसन्न हैं कि वहीं के आज मैं मुझसे एक भी रुपया दिया नहीं जाना-आना रहा हूँ।

आठ बजे रात्रि को भोजन-शुद्धि-जलपान के निमित्त जगाया गया।

स्वतन्त्र वही हो सकता है जो अपना कार्य स्वयं कर ले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते। ६५।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्। ६६।

सूर्या० ६।२२, सूर्या० ५।५७ — आज पुनः प्रसङ्गवश राम और उनके विवाह की सलाह देखिये - [illegible] विस्तृत [illegible] लक्ष्मण [illegible] "[illegible] आचार्य। वे [illegible] हो कर [illegible] गये। पुनः और विचलन देखा [illegible] राम के पुत्र हैं। [illegible] हैं। [illegible] प्रमाण नहीं है [illegible] हैं। [illegible] सकते हैं।

× × ×

सत्संग जंगम वन है, संयम कल्पवृक्ष है, और श्रद्धा कामधेनु है। जब साधक इस दिव्य नन्दन वन के कल्पवृक्ष की शीतल छाया में बैठकर कामधेनु का अनुग्रह प्राप्त करता है, तब उसी समय आनन्दमयी, अमृतमयी, शान्तिमयी भक्तिगंगा प्रकट हो जाती है और साधक का जीवन कल्याणमय, धन्य एवं कृतार्थ हो जाता है।

× × ×

"विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव
यद्भद्रं तन्न आ सुव।"

— (ऋ० ५।८२।५; यजु० ३०।३)

"ओ भूत, भविष्यत एवं वर्तमान कालिक समस्त जगत् का अधिष्ठान — नियन्ता है एवं केवल स्वः (विशुद्ध अनन्त आनन्द) है, जिसका स्वरूप है, उस देव (अति प्रकाशमय) ब्रह्म को नमस्कार है। ऐसे सायंकाल नमस्कार है। प्रातःकाल नमस्कार है, रात्रि में नमस्कार है, दिन में नमस्कार है। अर्थात् सदा उसी की ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारी बुद्धि × ×

हमारी भक्तिभाव से भरी बुद्धिदात्रियों मुक्तीरहे, उस विश्व उत्पादक एवं विश्व-संरक्षक भगवान् को मैं दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करता हूँ। हे सवितादेव! भगवन्! हमारे समस्त दुःखप्रद कमजोरी को दूर कर और जो कल्याणकर सुखप्रद भद्र है, उसे हमें समर्पण कर!" —•—

ॐ यह मूल ध्वनि है। यह ध्वनि अ+उ+म् नाम की तीन ध्वनियों में फैल जाती है।

'अ' आविर्भाव है, 'उ' उठना या उड़ना है, और म् चुप हो जाना या अपने में लीन हो जाना है।

ऋक्-यजुः-साम की वेदत्रयी इन्हीं तीन मात्राओं का उपबृंहण है। तीन महाव्याहृतियाँ— भूः, भुवः, और स्वः इन्हीं तीन मात्राओं से निकली है। सृष्टि, स्थिति और प्रलय का प्रकाशन भी इन्हीं तीन मात्राओं से होता है। सत्, चित्, आनन्द की तीन [redacted] सत्ताएं भी इन्हीं से प्रकट होती हैं।

'ॐ' ब्रह्म का वाचक है, इसमें तीन वर्ण हैं। अ, उ तथा म्— इनके अनन्तर एक चतुर्थ वर्ण भी है, जो अर्ध मात्रा रूप है और सुनाई नहीं पड़ता।

'ॐ' कार के ये चारों वर्ण ब्रह्म के चारों पादों के सूचक हैं, जैसे- 'अ' = अव्यय पुरुष, 'उ' = अक्षर पुरुष, म् = क्षरपुरुष और अर्ध मात्रा परात्परपुरुष है।

इस प्रकार 'ॐ' ब्रह्म के चारों पादों का सूचक है। इनमें प्रथम 'अ' को लें। 'अ' का ऊष्मा भाग विकास को बतलाता है, स्वरी भाग संकोच को बतलाता है। विकास अग्नि है तथा संकोच सोम। इन दोनों के मिश्रण से पूरी सृष्टि बनी है। जिस प्रकार अग्नि सृष्टि अग्नि और सोम से बनी है, उसी प्रकार सारी शब्द सृष्टि भी स्वरी तथा ऊष्मा के संयोग से बनी है।

हमारा व्यक्तित्व विश्व का प्रतिबिम्ब है। विश्व में पृथ्वी है, हममें शरीर। विश्व में चन्द्रमा है, हममें मन। विश्व में सूर्य है, हममें बुद्धि। विश्व में परमेष्ठी है, हममें महत्। विश्व में स्वयम्भू है, हममें अव्यक्त। इस प्रकार हममें पूरे विश्व का प्रतिनिधित्व हो रहा है।

RajGuru Math Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते। तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि। ६७।
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। ६८।

सूर्यो० ६।२१, सूर्या० ५।५७ — व्रत-पूर्णिमा, होलिकादाह रात्रि ११.३४ बजेके बाद

प्रातः तंजेक हेयक- नारायण की ओरी डाली मनमें धरगई।

"उन्नतिरेव मानवस्य जीवनो जीवनोऽयनम्"
—(अथर्व० ५।१।७)

'उन्नत होना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है।

× × ×

"धेनुं सदनं रयीणाम्"
—(अथर्ववेद-१९।१।३४)

'गौ सम्पत्ति का घर है।

× × ×

'महीस्त्वेव गौर्महिमा'
—(शतपथ-ब्राह्मण)

गौ की महिमा महान् है।

क्रोध करना हो तो अपने दुर्गुणोंपर करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।६९।

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८ — पूर्णिमा

आज बीसी खुर्द के अपने भक्तों - रामदयाल कर एवं नथुनीराम शर्मा आदि को एकादशी पोथी अर्थ लिखा।
श्री ललितेश्वर प्रसाद राम लिखा आदेश मिले - महा जाड़ी वाले बैस्कैट।
प्रमोद पाण्डेय रहने को पढ़ने लिये बताया। देवरिया के श्री विजय बहादुर कोठारी आदि पड़ोस में रहने वाले को गेरी पैसे गाला कलस्या का प्रभारी बनाकर गये।

× × ×

'ऋषयो मन्त्र दृष्टारः'।
निरुक्तकार ने भी कहा है → वेदमन्त्रों के साक्षात्कार होने पर साक्षात्कारी को ऋषि कहा जाता है।' → ऋषिर्दर्शनात्'

हमारी लगन और प्रणिधान प्रतिदिन बढ़ते ही जाने चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।७०।

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८ — वसन्तोत्सव, होली

आज दिन में नित्यप्रवचन के बाद मौजन किया। उनकी पार्टी थी। तथा बगल में काशी उनकी पत्नी थीं, जिनके पति गंगाधर इस्टीट्यूट में प्रबन्धक पद पर थे। फलतः इनका काफी दिमागी के साथ अपना व्यवहार निभाते हैं। दोनों ओर से गम्भीर इतना दाम्पत्य सीमित थी। उनकी वजह से मेरा प्रश्न आज के दिन उलझ जाता है। मनोवेग के अनुसार बिना उद्योग।

परवैक्यकमाल, राजा जी भी विवसुविएम. मिश्र का सैज्जाल स्कूल और ऊँट के जमाने का बहुत कपड़ा गये। उनसे ७ मार्च के जिज्ञासा शुरू कार्यालय लिए कार्यक्रम की चर्चा हो गई। उन्होंने कहा कि मुझे उस बारे में नहीं है। मेरा नाम सभा संयोजक संचालक में है, और मैं ही नहीं जानता। मन्त्रमन्त्री सौंपना भी मिले थे जो भी कार्यक्रम से अनजान नहीं है। यह गोपाल एम. मणि मुरण कंपनी का विज्ञापन है। ऐसे ही लोग जाति का नाम लेकर उसे बदनाम करते हैं। ऐसे सेवकों से सदा सजग सावधान रहना चाहिए।

भलाई करनेसे समाजकी सेवा होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।७१।

सूर्यो० ६।१९, सूर्यो० ५।५९ — आज उनके पूर्वाह्न में ईशान अपनी धर्मपत्नी एवं प्रेम भाइयों के साथ गङ्गास्नान के लिए आ पहुँचे। प्रेम-सुधा का यह मेल अद्भुत था। इच्छाओं का विजय उत्कर्ष होता है। आज मैं पिछली घटनाएँ धर्मपत्नी-पदार्थों को लेकर कुछ और लेकर गईं। पुत्र की वह जो वजह-प्यारी है। साथ काशीपुरी, उसके प्रति गंगातट-स्नानों में प्रत्यक्ष हैं। दिग्गज के पास कर वन्दना रहे हैं। दोनों में आरूढ़ प्रतिष्ठा की दक्षिणा थी।

× × ×

भेद मतमें होता है, प्रेममें नहीं। प्रेम सम्पूर्ण मतवादोंको खा जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।७२।

ॐ. तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे साङ्ख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः।२।

सूर्यो० ६।१८, सूर्या० ५।५९

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज श्री विजय बहादुर की धर्मपत्नी - पेशा सोदहसवजे भोजन लेकर आगईं - फलका जोग किया और चली गईं। प्रसाद ऊपर की ओर आँखें लगी हैं।

कल्याण पर वेदकथा - विशेषाङ्क पढ़ने और श्राद्ध - कार्यक्रम को उसी में किये रहे। शास्त्र में जो बुद्धि ढीला होता जा रहा है। कोई कार्य स्वतन्त्र नहीं है। काशी के मठ और वनस्थ आश्रम के नवनिर्माण तथा प्रबंध व्यवस्था की चिन्ता कष्ट दे रही है।

संत किसी भी सत्कार्यको पूर्णतः परमात्मामें निवेदन करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन। तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।१।
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।२।

सूर्या० ६।१७, सूर्या० ६।०० आज दिन में चिन्ताग्रस्त मौजूद नहीं किया। [illegible] बुद्धि-कौमारवाद अल्पमान कहिके छोड़ दिई। सांझका ७ बजे सस्ता, [illegible] ऊपरी चढ़ियनी सहित-बालपत्नी को लिये हमें पहुंचे, मन को शांति मिली। कुछ जलपान किया। रात में फलाहार तलाशी भोजन किया। अनन्तर विजयबहादुर शर्मा के साथ, बेनीपुर के मेरे गुरुभाई, श्री नीरेन्द्र कुमार शर्मा आ पहुंचे। कुशल-समाचार के बाद मंगलमय ईश्वर कृपा वापस गये। उन्होंने एकसौ रुपये पूजा रूप में दिये।

प्र० सपेत सुख तथा [illegible] लाभ [illegible] पहले का भी तरह [illegible]।

* * *

पेट के पुराने मोटे मोटे [illegible] - स्वामी हरिहरानन्द [illegible] पुर [illegible] में लगे हैं। उनका और परमपूज्य स्वामी का गुरु है। देवों का [illegible] कल्याण करें। वे [illegible] तथा मोटे स्वामी और [illegible] हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ । ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ।३।
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते । न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ।४।
सूर्यो० ६।१६, सूर्यो० ६।०० आज प्रातःकाल - गोपालराम गलिकूचा - जाकर
एवं स्वामी गणेशकेके द्वारा मिलक समारोह में गोपाल कपड़े
आदि का कार्य कुछ कराया ।
पचास हजार दूध आदि के मंजूर के बाकी लिया ।

व्यवहारमें बालक, सत्यमें युवक और ज्ञानमें वृद्ध बनो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।५।
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।६।

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ६।१ आज पटना-पटेल-नगर-गंगापथ-के दफ्तर-श्री कालिकाप्रसाद-वंशी खुर्द-अधिकारी-पटना, अपने शिष्य औ अभियंता हैं-को पत्र लिखा।

आज कलकत्ता रुपादिया-कलम-तथा स्वामीजी के दर्शन-भाकज की फोटो सेट प्रतिलिपि कीजिये। हनुमानघाट-से विश्वनाथ-खाता [illegible] से दो सौ रुपये- गेल सिलिण्डर तथा मन्नजुकार कार्यों के लिये- बनारस प्रभोगकर्ता के जिम्मे किया।

धन्य हैं, सद्गुरु जिन्होंने गोविन्द दिखा दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर। ९।
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।१०।

सूर्यो० ६।१२, सूर्या० ६।२ — **श्रीशीतलाष्टमीव्रत**

आज काशी, शिवालाघाट मठ से प्रस्थान करके बक्सर के आश्रम पर पहुँचे। मीरे [illegible] रामी-पुष्प की उमीक [illegible] विवाह [illegible] केवल [illegible] हो [illegible] लिये [illegible] आज के मीनमी [illegible] स्वीकार [illegible] का [illegible] पवपरक [illegible] [illegible] हैं।

[illegible] हि मेरे [illegible] भी [illegible] प्रतिपाल [illegible] पहले [illegible] हुए [illegible]। उन्हीं में आश्रम के [illegible] पूजा [illegible] गये। [illegible] के लिये [illegible] आया।

रात को [illegible] इधर [illegible] कोई [illegible]। गंभीरा [illegible] स्वामीजी [illegible] आज्ञा [illegible] हैं।

[illegible] हुए और [illegible] बनाना [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।११।
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।१२।

सूर्यो० ६।११, सूर्यो० ६।३ प्रातः उनके पास संस्कृत - हिन्दी कोश सर्वदा मिलेंगे.

इस तक भी उन्होंने रूप भाव जा देना ऊँचे पारितोषिक को उनके बच्चों की दीक्षा को, कार्तिक नगर उदय। [illegible] - [illegible] है. इस [illegible] की [illegible] की [illegible] [illegible] गई ले कर [illegible] [illegible] [illegible] गये। इसके [illegible] किया [illegible] के बाद लौटे।

[illegible] नया किया गया.

× × ×

[illegible] बैंक [illegible] इण्डिया. [illegible] [illegible] है. [illegible] किया.

[illegible] की [illegible]

[illegible] बहिनों की बड़ी [illegible] के [illegible] = [illegible] + [illegible] = [illegible].

नया [illegible] की [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] सोलह [illegible] [illegible] = [illegible] [illegible] [illegible] में पहले का [illegible] था। कुल [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] के लिये काशी [illegible]।

जो समय भगवद्भजनके बिना जाता है वह धूलिमें मिल जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ।१३।
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः । यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ।१४।

सूर्या० ६।१०, सूर्या० ६।३ आज बुधवार को - जन्मदिन एवं के दोनों को - केवल एक जैसे - योग में इकट्ठा नाम एवं शिक्षा का दान दिया उसे पिपरा फुलाहा के बाद कथा (जैसे की दीक्षा दिया - मोक्षकर्ता) लिखने के कारण पढ़ लौटे है।
सायंकाल - आम दिवसी - हनुमान जी (गोपाल) लेकर आये।
रक्षा हिंसक को कर दी। उसे आशुतोष के लिए पान कर दिया।
पंचेजा की चिट्ठी तथा मैया कलश को वापस कर दिया गया। धूप पैंट हवन को। उसके मजूरी के पश्चात दिया।
चुनाव की मालूम हुई - श्री स्वामीनाथ त्रिपाठी के आगमन के प्रसंग का श्रवण नहीं। वि. उम्मेदचन्द की मालूम पड़ गये।
चन्द्रदीप राय के द्वितीय मातृका को पढ़ाया जैसी दीक्षा दिया।
समाचार-पत्र देखा - पढ़ाया गया दीक्षा हुई जो स्वामीनाथ जी स्वयं ही आ कराई हुई थी। खाने का बनाना पूजा में उपस्थित मिले।

दोष देखना दोष है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।१५।
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः। अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।१६।

सूर्यो० ६।९, सूर्या० ६।४ — पापमोचनी एकादशीव्रत (स्मार्त)

आज बनारस एवलपेल में अपने [illegible] संगा [illegible] मेला [illegible] में [illegible] सेवाकर्मी [illegible] होते...

× × ×

स्वामी हरिश्चन्द्रानन्द, श्रीमन्नन्द, रामकृष्णानन्द की [illegible] के स्थान [illegible] हैं। एक ने एकसंकल्प [illegible] है।

"अपने चरित्र [illegible] कर्म वाले इन लोगों की [illegible] अपने कर्म का फल [illegible] पावेंगे।

× × ×

× धर्म में विलम्ब अनुचित ×

" विलम्बं नाचरेद् धर्मे चलं चित्तं विनश्यति।
इन्द्रागस्त्यसंवादं एष धर्म उदाहृतः॥

अपने यहाँ 'शुभस्य शीघ्रम्' जो कहा जाता है, यह उपदेश इसी की छाया है। यह तो चित्त की चंचलता को लक्ष्य कर वैदिककथा (भट० पा० १९, पा० १७०) भी इस बात की पुष्टि करता है।

ध्यान रहे कि कर्तव्य-कर्म का आदान या प्रदान शीघ्र नहीं किया जाता तो मृत्यु [illegible] सारा रस पी जाते हैं, चूस लेती है और वह कभी सीधी सा हो जाता है। निष्प्रयोजन बन जाता है।

इसके निदर्शन में वैदिक कथा इस प्रकार है:→

'अगस्त्य ऋषि कोई यज्ञ कर रहे थे, उस समय उन्होंने 'महाव्रत' (भट० पा० १९, पा० १७०) इस मंत्र से पहले वरुण की स्तुति कर उनके लिये स्तुति कर उनको लिये हवि अर्पण किया, पर राजा के भाग वश वरुण के आगे में विलम्ब हो जाने पर

दहेज माँगना साक्षात् जगन्माताका अपमान करना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः। आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते। १७।
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन। न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः। १८।

सूर्या० ६।८, सूर्या० ६।४ — पापमोचनी एकादशीव्रत (वैष्णव)

उन्होंने कहीं हवि मरुतों को देने की ठान ली। देर से पहुँचने पर जब इन्द्र ने जब यह रहस्य जाना तो वे शोकाकुल हो बिलखने लगे। अगस्त्य ने कहा [illegible] आगे मिल जायेगा।

बेर पर इन्द्र कहने लगे: — 'ऋषे! जो आज उपस्थित है, जब वही हमें मिल नहीं पाता, तो आगामी दिनों में वह मिलेगा, इसका क्या ठिकाना? जो अभूतपूर्व है, उसे कौन जानेगा? भला आज क्षण सहस्रों विजयों में भटकने वाले किसी के चित्त को कोई जान सकता है?'

× × ×

जिस घर में गुरु का आदर-सम्मान किया जाता है, दक्षिणा, भोजन, वस्त्र आदि से संतुष्ट किया जाता है, वहाँ ब्रह्मादि देव भी सदैव प्रस्तुत हो सहायता करते हैं।

अम्बावर्ती नामक राजा ने अपने गुरु भरद्वाज ऋषि को वस्त्र आदि से संतुष्ट किया, फलस्वरूप देवराज इन्द्र की सहायता प्राप्त करके वह वास्तविक असुरों के वध में सफल हुआ।

" देवाः कुर्वन्ति साहाय्यं गुरुर्यत्र प्रपूज्यते।
अम्बावर्ती सहायोऽयं भरद्वाजो गुरोर्यतेः॥"

× × ×

आज अजीतसिंह के जन्मदिवस पर [illegible] हुआ। [illegible] देवराय [illegible] सिंह-वकील [illegible] पिण्डदादन खाँ [illegible] पिलखुवा [illegible] — [illegible]

मनुष्य अपनी वाणीसे ही पहचाना जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।१९।
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।२०।

सूर्यो० ६।७, सूर्यो० ६।५

सोमप्रदोष

स्वर्गलोक का एक नाम 'नाक' भी है, क्योंकि 'नास्ति अकं दुःखं यत्र' - अर्थात् जहाँ किसी प्रकार का दुःख न हो वह नाक — स्वर्ग है। इसी अमृतमय दिव्यस्थान में, सूर्य चन्द्र इन्द्र आदि अनेक कल्पों के साध्यदेव महात्मा सदा निवास करते हैं।

× × ×

आज स्वामी हरिहरानन्दजी के दर्शन हुए।
स्वामी गंगीमाता में भोजन करते हैं और नाई रोपा किन्तु वे झूठ बहुत बोलते हैं। वे गाजीपुर तथा आसपास गांव राजापुर में रहेंगे। जाने पहले उनके मालिक के मालिक के लिये- क्योंकि वह एक के मालिक के जेल में बंद है। इसे भी ना ये अपराधी- सिद्ध है। किन्तु उपाय अभी हाथ में नहीं आये हैं। फल अच्छा ही- ऐसी उनकी धारणा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।२३।
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्। सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।२४।

सूर्यो० ६।५, सूर्या० ६।६ — अमावास्या

देव पितृ के कल्याण रूपी दानादि श्रेष्ठ बहुजनों के कालिक एवं के पुत्र-अपने अनुज के लग्न। आप भी पहले के निष्फलार्थ आकर रहे हैं। दोनों दिन रहेंगे।
आज छठे दिन- उत्तरी हृदय संगाकर दलेज के अंदर में लगा दिया गया।
स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती भाव प्रातः मंदिर के बाद मध्यप्रदेश यात्रा-२ चला जाऊँगा।
क्योंकि मेरा - वास्तव बहुत जोर का आग्रह है।
प० रामनिरंजन तिवारी के यहाँ गया वन्दनीय आनन्दमय में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत । कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् । २५ ।
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् । जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् । २६ ।

सूर्यो० ६ । ३, सूर्यो० ६ । ६ — चैत्र नवरात्रारम्भ, 'नन्दननाम' संवत्सर —

आज से प्रेमचन्द्र जयन्ती का अनुष्ठान पाठ कर रहे हैं।
श्री जगद्गुरु शंकर सिंह जी आगे आकर अपनी पाठ की
पांच सौ एक तमें दे गये। रसीद दी जा रही है।

जब गुस्सा आता है तो हँस दो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।२७।
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।२८।

सूर्यो० ६।२, सूर्यो० ६।७

प्रभाव कुमार आज विगत-आत्मा प्रसन्न हैं-
श्री अखिल कुमार सम-मारवाड़ पर हो गई - उनके सौजन्य
अदीबीवाला ड्राइंग लाइन के कारण ही आकलन-
एक झलक को चकनाचूर पन्नीस सौ रुपये - रुठ की
निर्माण-संपन्न व्यवस्था के कर्म में दिया जो पहले से उन्होंने
काम कर रखा था। साथ ही औ कुछ देने का आश्वासन
दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु । तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् । २९ ।
मयि सर्वाणि कर्माणि सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः । ३० ।

सूर्यो० ६ । १, सूर्यो० ६ । ७ — श्रीमत्स्य-जयन्ती, गणगोर

छोटे लाल दत्तजी को भोजपुरी कथा-साहित्य के मुद्रण-क्षेत्र में दे हुए स्वरूप प्रमोद कुमार द्वारा दिये गये।

× × ×

आज बड़ा के लाल गोपाल - कुल एकतीस दिन पूजा-समाज में दे कर गये। चरण छू के कुछ प्रसाद एवं प्रीति हुए। बीसवें दिन भाभी अन्नपूर्णा को पंदरहवा दे लिये दिया।

[illegible] - [illegible] - [illegible] - [illegible] गया - [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible]।

× × ×

आज मिश्रजी के कुमार [illegible] - [illegible] अपनी माता - [illegible] तथा पत्नी सहित [illegible] में आ पहुंचे। [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः। श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः। ३१।
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्। सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः। ३२।

सूर्यो० ६।००, सूर्यो० ६।८ आज मध्याह्न- डा० चंद्रेश्वर मिश्र जी, सस्ता
मे पहुँचे। यकायक स्फूर्ति शक्ति और प्रसन्नता की लहर
अंतःकरण में आ गई।
डा० चंद्रेश्वर मिश्र जी मिलनसार भी हैं।
प्रवासलहरीसंघ की चर्चा ही में मग्न अधिक रहे।
मिश्रजी ने- राजयुक्त न्यायालयों के विधिविधान के संबंध
में विधिवत विचार किया हुआ।
मठ के शोधसंस्थान की ओर से उनका विचार एक मासिक
सुव्यवस्थित आयोजन का है, जिसके लिये वे चर्चा करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति । ३३ ।
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ । ३४ ।

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ६।८

आज गु० चन्द्रशेखर मिश्रजी - फतेहपुर स्थान० से
पधार गये। उन्होंने पर अंगल को न्यास समिति में बैठक
में पञ्चाङ्गजयन्ती के व्यय का बजट आज का बजट दिया।
ये आगे पर मधु लगेंगे। वे जाते समय १०० एक सौ एक
रुपये दे गये।
सुश्री अन्नपूर्णा को एक शिवालय के लिये तथा बीस रुपये
शिव के तेल के लिये और आज किसी किसी आज्ञा किसी के
चौराहे के लिये - दिया - उसी रुपये।
तीन रुपये का पोस्टकार्ड पर हो गया।
लाइफबॉय को तीन रुपये चाकलेट - मिर्जई के लिये दिया।

अपना आश्रय और दीपक स्वयं बनो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।४३।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः।३।

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ६।११ — कामदा एकादशीव्रत

आज राजगुरुमठ से सायंसंध्या-एक्सप्रेस से १२बजे मोंगलखण्ड के लिये चलना है। मोंखला के दक्षिण-गुप्तांव में आत्मशक्ति परिवार के लड़के आये। कल कानपुर हकसम के लिए कर छोड़ दीक्षा कार्य करना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।१।
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप।२।

सूर्या० ५।५२, सूर्या० ६।११ आज पं० रामकेश पाण्डेय सिमरी से नमो नारायण पाण्डेय आदि के साथ अपनी गाड़ी लेकर ठकुरान ले जाने के लिये आये। मैं श्री भागीरथ शर्मा, अखिलेश, उदयपुर तथा अन्य ठकुरानी स्थान पर प्रमोद के साथ सवेरे ग्यारह बजे ठकुरान चल दिये, उन्नाजिला स्थान पर गन्धानीगंज बिहार के ग्राम गौरहा आदि में भाग लेने के लिये पहुँचे। बहुत आदमी चन्द्रगावों के उत्साही युवाओं द्वारा वृक्ष लगाने - ग्राम में पास्य कि एकता एवं गादवी संस्कृति - अस्तित्व का अच्छा स्वरूप दिखाया गया। घंटे तक बैठकर भक्त पांच बजे लगभग वहाँ आश्रम पर पहुँचे। यहाँ देवा ने रामपुरा से पुनः गाजर - लकड़ी लगाने पाण्डेय जी सिमरी लगाया। रमाशंकर दूध लेकर आये तो उन्हें आशीर्वाद एवं नमस्कार किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः। भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।३।

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।४।

सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ६।१२ — सोमप्रदोष, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन)

आज बड़ौदा गुजरात में जन्मे पूर्व शिष्य श्री आदित्यनाथ राजनाथ के घर उनके मामा श्री चन्द्रशेखर राव के यहां गये। ये लोग श्रीयुत के भी अग्रज लक्ष्मणराव के परिवार के संबंधी हैं। चन्द्रशेखर राव को निश्चिपूर्वक पंडित मंत्र की दीक्षा दीजिये मेरा निर्णय कंपनी के विषय लेकर उनमें आस्था पैदा पुनः वापस आ गये। अपने हमारे पुत्र के वैवाहिक पांडे के परिवार के दौलत व रिश्तेदार "ब्रजकिशोर पाण्डेय" के भाई कन्हैया कन्हैयाजी ने पास्पर रूप से वैद्य भी सामाजिक बातें हुईं। ये लोग वत्स गये। पंच को चन्द्रशेखर राव सुपाद के कारण उन्हें दीक्षा मंत्र का लिखित व्याख्यासहित विवरणपत्र दे दिया।

कामना करनी हो तो निर्मल भजनकी करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।५।
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् । प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।६।
सूर्यो० ५।५०, सूर्यो० ६।१२

आज प्रातः पेंशन के मेल से प्रमोद कुमार के साथ लिए - वाराणसी केंट उतरकर अपने मठ में पहुँचे। आलू-रुपया अदवी के लिए खरीदा है किलो ढाई तक मेल आये। बीच में के लिए ठंडे पेय की एक किलो पानी के आये। मठ में हरिनारायण के किले। पुस्तक छपने का कार्य चल रहा है। स्वामीजी विदाई से सत्रिक पार्क के बाकी किलेपेड़े चौदेलाल पकड़ी के दे दिया गया। श्री राजेन्द्र - पिपरा के आये। उनकी दया के क्रम में, उनके साथ कॉपरेट के एक सज्जन जो अहमदाबाद में व्यापक में दीक्षा के हैं, साथ आये। देखने रहे हैं। श्री राजेन्द्र की दया के क्रम में जो पड़ताल आ रही है। मधुकर शब्द की शिष्या है वही है।

जो परिस्थिति सामने आ जाय, उसीमें प्रसन्न रहना 'भजन' है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।७।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।८।

सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ६।१३ – श्रीहनुमज्जयन्ती, पूर्णिमा, वैशाख-स्नानारम्भ

स्वामी हरिहरानन्द जी अपनी स्थिति-परिस्थिति नहीं
मठ की प्रबन्ध-व्यवस्था के संबंध में कुछ समझना-
पढ़ने वाले कागज-पत्र-रुपया-एवं मन में राज्य विषयक बिखरी
जीव हैं। कोई स्पष्ट जीवन नहीं जानते।

उनसे पता चला कि परम पूज्य श्रीकृष्ण महाकल्पूर
कुटी पर स्वामीजी के हस्ताक्षर हो गये हैं। कुछ
निर्णय आपके दोनों की मिली भगत से वश बन रहे हैं।
मुझे – सन्यासी की मर्यादा नहीं मठ की गौ रक्षा
की मुहिम के विरोधी की भूमि कदापि स्वीकार
नहीं है। मठ चले या न चले।

अनुशासन एवं परिश्रम अत्यन्त जरूरी है।
जो अनुशासन विहीन है। वह भविष्य में मठ क्या संभालेगा?

कीर्तनका विक्रय महान् मूर्खता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन। ९।
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः। बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः।१०।

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ६।१३ आज स्वामी हरिहरानन्द - कैथा सत्संग में पट
उदंकार देवी के शिष्यों के यहां - मठ में सपरिवार
में सहयोग प्राप्त करने के लिये गये।

आज राजनीतिज्ञ - अध्यक्ष दयाशंकर मोजमपुरा
सहसपुर में था वापस गये।
पत्रिका भेजा दे गये।
सर्वत्र स्मरण -

भगवान् सर्वसमर्थ होते हुए भी हमारेसे दूर होनेमें असमर्थ हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।११।
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः। क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।१२।

सूर्यो० ५।४७, सूर्यो० ६।१४

आज मध्याह्न- बोकारो से श्री युतेश्वरानन्द
राम अधिकारी अभिमन्त- आगये। अपने कक्ष- विभव
के लड़के को सर्व विभ- बाल-विद्यालय में भर्ती एवं अपने
शाला वास की प्रबंध-व्यवस्था में रखने के लक्ष्य में आये हैं।
अपराह्न विभव माता से बच्चों को लेकर अपना परिवार
लेकर आये। सभी ठहरे हैं. पथ शब्द- व्यवस्था हो रही है।

राग-द्वेषपूर्वक किये गये कामका परिणाम अच्छा नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति। ३९।
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति। नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः। ४०।

सूर्यो० ५। ३२, सूर्या० ६। २१ —— अमावास्या ——

जैनेन्द्री आदर्श परीक्षा शुरू.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगसन्न्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम्। आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय।४१।
तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः। छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत।४२।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः।४।

सूर्या० ५।३१, सूर्या० ६।२१ — [illegible]

अपनी स्थितिके अनुसार ही कार्य करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि। यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।१।

श्रीभगवानुवाच

सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसन्न्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।२।

सूर्यो० ५।३१, सूर्यो० ६।२२ — अक्षय-तृतीया, श्रीपरशुराम-जयन्ती

जयंती आज गर्भ में तीन बजे ऊषाकाल - [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति। निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते। ३।
साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्। ४।

सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२२ ~~श्रीगीता-से उद्धृत पॉइंट लिखा गया तथा~~
~~पॉइंट सो हमने पूछा स्वामी दण्डिस्वामीजी के मार्गदर्शन~~
~~दिया। वेदान्ताचार्य शास्त्रीजी लाइब्रेरी जो वृद्धकाल है कहा जाता है.~~

सत्य ही कलिकालकी तपस्या है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।५।
सन्न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति।६।

सूर्यो० ५।२९, सूर्यो० ६।२३ — आद्यशङ्कराचार्य-जयन्ती

[illegible] प्रकाश का शासन ठीक [illegible] रहते हैं और स्वामी
ही दर्शनीय और उनकी - [illegible] पुत्र चंद्रमा है - यह
[illegible] में [illegible] है कि दंड फैलाकर
गुप्तचरों और राज्य गुप्तचरों की मर्यादा को। जाकर
संगठन - अहंकार एवं क्रोध से प्रीति - [illegible]
[illegible] है - [illegible] में ऐसे लोग [illegible] सहायता एवं
उनके विकास में योगदान करेंगे - [illegible]।

[illegible] पर [illegible] प्रयोग बहुत [illegible] और
[illegible] को [illegible] दमे से रोक कर [illegible] लाइन चलेगी।
बड़ी [illegible] के बाद [illegible] अनुयायी [illegible]
[illegible] गया।

[illegible] यह कहना कि इकोनॉमी [illegible] आप उनका
[illegible] - [illegible] दायित्व का [illegible] है।
मैं चाहता हूँ कि जो उत्साही नवयुवक, जो [illegible]
[illegible] - [illegible] सरकार - [illegible] वर्षों से भी सेवा में
[illegible] हैं। [illegible] में उनके [illegible] - [illegible]
[illegible] राज्य [illegible] और उनके [illegible] में कोई [illegible]
[illegible] - इसलिये [illegible]। मैं [illegible]
[illegible] कोई [illegible] और भी [illegible]
होंगे।
[illegible] - [illegible] सिंह [illegible] उपाध्यक्ष [illegible]
[illegible] पते [illegible] तथा - [illegible]
[illegible] [illegible]

जिस लोक-कल्याणमें अभिमानका पुट है वह तो मोह है—त्याज्य है।

[illegible] - [illegible] लोगों [illegible] पते
[illegible] है।

RajGurU Math, Shimla - Vasanta Coimbatore

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः । सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।७।
नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् । पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्।८।

सूर्यो० ५।२८, सूर्यो० ६।२४ — श्रीरामानुजाचार्य-जयन्ती

तीन दिनों से बहुत हरिचिन्तन की इच्छा है कि
योग कैसे मिलेगा।
आज बेहार से मिश्र शर्मा पुत्र श्री [illegible]
राम पत्नी सहित अपने बच्चे को देखने आये और
"सन-बीम" स्कूल में शिक्षा कराने गये हैं।
उनसे भी मठ की जानकारी मिल गयी
होगी।

प्रमोद-एक कार्तिक मई की इस संबंध में [illegible]
नहीं लगते- वे [illegible] कुछ
कार्तिकों का प्रयास करते हैं। किन्तु सफलता
मिलती है।
कुछ के बाद ये लोग बहुत दिनों से यहाँ
रहकर बहुत प्रकार की सहायता तथा कठिन
अवसरों पर सहायता भी करते हैं।
ये लोग अकलेश्वर - रेवा संस्था से बहुत
अच्छे हैं और आज्ञाकारी सेवक हैं।
[illegible] की सेवा भगवान भी रखते हैं।

x x x

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्। ९ ।
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा। १०।

सूर्यो० ५। २७, सूर्यो० ६। २४

आज : पाल : कलकत्ता के धर्मराज अपकीर्ति को
रंगे अंगेज पुत्र सहित चल गये। माधवी बुलवाकर
गये। मानिकलाल से मिलिये शत्रुघ्न राम वसुमत जगती
चिकित्सा के वृक्ष हैं आ गये हुए हैं।
डा० चन्द्रेश्वर मिश्र मुजफ्फरपुर तथा श्रीदुर्गाप्रसाद,
अधिशासी अभियंता बाढ़ को लिफाफों में भर
दी आस-समिति की बैठक के लिये पत्र लिखा।

साधक उसीको कहते हैं, जो निरन्तर सावधान रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः। अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।१५।
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः। तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्।१६।

सूर्यो० ५।२४, सूर्यो० ६।२६ आज वाराणसी महाशिवालाघाट से दर्शनीय पश्चिम उपनगर के लिये प्रस्थान। आश्रम स्टेशन के पास संन्यासिन शर्मा के निवास पहुँचे कृष्णकुमार शर्मा मिले। भोजन विश्राम किया। चौधरी आज्ञेयनन्द जी को बुलाकर मिले विचार विमर्श किया — सायंकाल कृष्णकुमार के साथ टेम्पू से उनके घर पहुँच विश्राम किया — मुनिशर्मा एवं शिवलक्षण शर्मा के पत्र सूचना दी गई कि वे दीक्षा इत्यादि की व्यवस्था करें। सुमन वर्मा जी पर व्यवस्था प्रारंभ हुई।

श्रेष्ठ साध्यकें लिये श्रेष्ठ साधन भी आवश्यक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः। गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः।१७।
विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।१८।

सूर्यो० ५।२३, सूर्या० ६।२७ — **मोहिनी एकादशीव्रत**

आज शिवलाल के यहां किसी का आगमन हुआ - अमुक विवाह में बाजा हो रहा था। पता चला कि मैं भोजन उन्हीं के यहां से कर लूं। मैं लाला ब्रह्मानन्द शर्मा के कारण उनके यहां ठहरा था। अंधेरे में ही देवदयाल जी पाण्डे जी आ पहुंचे। पाण्डे जी बहुत सी बातें हुईं। वे बड़े पुण्य के कारण देहावसान के बहुत संतुष्ट थे। आचार्य जी भी आ पहुंचे।

सायंकाल पांच बजे मुनि शर्मा के घर पहले दीक्षा-संस्कार आदि का कार्य हुआ। बहुत देर तक भी बेचारे पन्ना शर्मा एवं अन्य लोग भी बैठे देखते रहे। मुनि शर्मा के दो पुत्रों में से एक पुत्र एक मास तथा दोनों पुत्रों की पत्नियों को पहली बार दीक्षा दी गई। इस प्रकार कुल "ॐ नमः शिवाय" की दीक्षा दी गई। तदुपरान्त लाला गोहरमल, विजयपाल, बेमन, बलराम, चरणदास आदि के घर दीक्षा-कार्य विधिवत् हुआ। मैं रात्रि को ९ बजे बेचारे पन्ना शर्मा के द्वारा पर लौटे। भोजन किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः । निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ।१९।
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ।२०।

सूर्यो० ५।२२, सूर्यो० ६।२७ — **भौमप्रदोष**

आज प्रातः वेणीमाधव शर्मा के साथ देवरिया से आए उनके घर पहुँचे। भोजन विश्राम किया - शाम की ट्रेन पकड़कर वाराणसी आये। गाड़ी में अमृतोपकुमार राय पुत्र स्व० [illegible] राय मेजर [illegible] अमिपत्ति रिलवे मालपुर से बक्सर [illegible] कर रहे थे। मिले। वे नवल काए के [illegible] जौनपुर के [illegible] गये थे। वे गए सपरिवार मिलने चुलने आ रहे थे। वाराणसी मठ में चाय के पहुँच गये। शाम के नाश्ता भोजन किया।

ग्राम देवरिया में पूजा प्राप्त का विवरण :—

(१)	श्री वेणीमाधव शर्मा	४५२।-
(२)	राजेन्द्र (सिंह) शर्मा	१०१।-
(३)	[illegible] शर्मा	५१।-
(४)	घनश्याम शर्मा	१२।-
(५)	कालमोहन पाण्डेय	५१।-
(६)	प्रिय वल्लभ पाण्डेय	१२
		५८०।-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ । २७ ।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः । २८ ।

सूर्या० ५ । १९, सूर्या० ६ । २९ — आज मुंबई के प्रसिद्ध — श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह जी — राजगुरुमठ — [illegible] की सदस्यता का [illegible] विग्रह के बारे उपाधिक्रम के संबंध में स्वा एम लिखापढ़ी में लिखा — मे० [illegible] सहस्रार गोरक्षिणी के भी उनकी लेखी [illegible] के संबंध में [illegible]। श्रीप्रमोद [illegible] दीक्षित को फोटो नकल रखने को कहा। दर्शन [illegible] पुस्तकों पर दो पत्र — श्री राजेन्द्र शर्मा — वे श्रीपुर और [illegible] निकलवाया [illegible] — श्रीपुर [illegible] की न [illegible] बैठक में [illegible] के लिये [illegible]। राजपुर [illegible] के राजपुर गांव के — [illegible] श्री रघुनाथ [illegible] जो [illegible] के जनरल मैनेजर [illegible] आये हैं। [illegible] के [illegible] श्री [illegible] सहस्रा मठ में [illegible] का पड़ा। [illegible] हुआ। [illegible] — [illegible] के [illegible] — [illegible] के [illegible] — [illegible] के [illegible] — [illegible] के [illegible] — [illegible] चर्चा — [illegible]। [illegible] हुआ [illegible] देशाटन [illegible] गया।

सुन्दर वही है जो सुन्दर काम कर दिखाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।२९।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसन्न्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः।५।

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३० कृष्णजी के [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] टीका करते [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] ~~[illegible]~~

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः। स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः।१।
यं सन्न्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव। न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन।२।

सूर्या० ५।१८, सूर्या० ६।३० आज रात में डायरी से संजय पुत्र रामनरेश पाडे के माध्यम से प्रमोद कुमार को टेलीफोन से मकरिसोत्रि पं० श्री रामप्रसाद उपाध्याय, ज्वाला मंदिर बगान मूल जन्मस्थान, रामपट्टी सिसरौर वक्सर के १ मई को दिवंगत होने का अत्यन्त दुःखद एवं शोकसंदेश मिला। मेरी दो दिन के लिये भी अत्येष्टि में डायरी बुलाइट है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः। सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्।१३।
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः। मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः।१४।

सूर्यो० ५।१३, सूर्या० ६।३३ देहरादून एक्सप्रेस से प्रथम श्रेणी में चार वर्ष-शायिका का आरक्षण कराकर, प्रभाष जनकी धर्मपत्नी, स्वामिनी हिमालाल सहित डायमंड-जी श्रीराम पराठेम जी अंतेमष्टि में शामिल होने के लिये रवाना चले।

मनुष्यकी पहचान उसके विचारोंसे होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः। शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति। १५।
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन। १६।

सूर्यो० ५।१२, सूर्यो० ६।३३ मेरे साथ यात्रा में मथुरा जंक्शन के इन्द्रजीत शर्मा भी थे। 90 वर्ष उम्र। उनका टिकट दादर 8919 में बिना आरक्षण पड़ा था। वह मन्त्रीजी की बोगी से पकड़े गये। भी इन्द्रजीत शर्मा के लिए मैं मिर्जापुर में बर्थ आरक्षण रखा गया। शाम को वहीं हुआ वमन उल्टा रहा था भी रेलवे पुर के मंत्री भोजन किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। ३५।
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः। वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः। ३६।

सूर्यो० ५।६, सूर्यो० ६।३९ [illegible]

[illegible]

श्रीराम [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

मेरे [illegible] [illegible]। [illegible], [illegible], बड़ी संदूक। [illegible] [illegible] [illegible] आदि-सभी के [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः। यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते।२।
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।३।

सूर्या० ५।४, सूर्या० ६।४४

तथागत के प्रतीत्यसमुत्पाद-दर्शन में प्रतीत्यसमुत्पाद ही शून्यता है और यही शून्यता मध्यमप्रतिपद है।

"यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यतां तां प्रचक्षते।
सा प्रज्ञप्तिरुपादाय प्रतिपत्सैव मध्यमा॥"

नागार्जुन की यह कारिका सुप्रसिद्ध है।

सब कुछ प्रतीत्यसमुत्पन्न या परस्परापेक्ष है जैसे ~~अस्ति-नास्ति आदि कोटियों~~ - उनका अपना कोई स्वभाव नहीं रह जाता और निःस्वभावता ही वस्तुतत्त्व या वस्तुस्थिति है जैसे अस्ति-नास्ति आदि कोटियों की कल्पना का अवकाश नहीं रह जाता। जब कोई इन विभिन्न कल्पनाओं से मुक्त हो जाता है, तभी निर्वाण की प्राप्ति होती है।

× × ×

"सर्वोपशमं निरवशेषं कल्पनाक्षयरूपमेव निर्वाणम्॥"

प्रसन्नपदा में निरवशेष कल्पनाक्षय को ही निर्वाण कहा गया है।" इस अवस्था में परमतत्त्व संबंधी विभिन्न अस्तित्व, नास्तित्व आदि अवधारणाओं से मुक्त होकर प्रज्ञावान् व्यक्ति मध्यमपथ का ही अनुसरण करता है।

"परमार्थो ह्यार्याणां तूष्णीभावः।"

चन्द्रकीर्ति प्रसन्नपदा में तूष्णीभाव को ही परमार्थ बताते हैं, यह तूष्णीभाव नहीं है, यह ~~[illegible]~~ कोई अज्ञता या परतत्त्व की अगोचरता के कारण या अनेकवादी अथवा एकवादी तूष्णीभाव नहीं है, यह तो धर्मों के निःस्वभावता का ज्ञान होने पर दृष्टियों के निःसरण के कारण वादों के बीच तटस्थता का भाव है। या तूष्णीभाव है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च। अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।४।
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।५।

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४४ — व्रत-पूर्णिमा

आचार्य चन्द्रकीर्ति 'प्रसन्नपदा' में तथागत के स्वरूप में कहते हैं:— "तत्र तथागतो न कल्पयति न विकल्पयति सर्व कल्पविकल्प जाल-वासना-प्रपंच विगतो हि शान्तमते तथागतः।" अर्थात् तथागत सर्व कल्पना-विकल्प जाल से मुक्त होते हैं। निःस्वभावता का ज्ञान होने से मुक्ति होती है। यह कल्पनाओं से मुक्ति मिलती है और यही निर्वाण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् । आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ।१८।
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते । वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१९।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४८

आज बीसी खुर्द के वक्त (भौ-रहे) ईश्वर से आशीर्वाद एवं दीर्घायु लेकर साथ आये।
सात सौ बीस रुपये ईश्वर भाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ।२०।
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ।२१।

सूर्यो० ५।२, सूर्यो० ६।४८ उपरुक्त फार्मूला एक्सप्रेस से दो बोरी अन्न चावल-गेहूँ के लाभ मठ में पहुँचे। इन्हीं सर्वोत्तम अन्नादि को मैं।

डा० वीरेन्द्रनाथ शर्मी : दाँत की चिकित्सा के लिये आये हैं। स्वामी मुनीश्वरानन्द - निरुद्धमी धर्मोत्तर टिकेंगे मलमास में वशिष्ठा-मेघना-कल्याण सुख प्रचुर हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्।२२।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्। देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि।२३।

सूर्यो० ५।२, सूर्यो० ६।४८ विद्या संस्कार के राजमार्ग पर "भिखारी ठाकुर" पुरस्कार रु.५२ को पाकर पुनः कार पर चढ़ के आगाह - लोक का अनुभव रजिस्ट्री से आया है।

भगवान्‌की सेवामें लगनेवाला ही आत्मीय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः। परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्। २४।
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः। मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्। २५।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

[illegible] बाँसीखुर्द के शिष्यों से प्राप्त पैसों में से [illegible] का प्रबंध-व्यवस्था कीजिये जिसमें पैसे [illegible]। चीनी १२०० रुपये, लालमणि वाली दाई को [illegible] मास्टरनी को [illegible] रुपये। दवाई के मद में पाँच रुपये गनेश पिताजी।

श्री रामाश्रय की चर्चा से प्राप्त [illegible] रुपये-दूध आदि का बाकी देने में। सभी साधुओं के लिये पुष्पपात्र [illegible]।

× × आज [illegible] शाम [illegible] वापस गये।

किसी भी लोभ या भयसे सत्य एवं धर्मका त्याग न करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन। भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन। २६।
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत। सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप। २७।

सूर्यो० ५।२, सूर्यो० ६।४९ आज पौष्य सज्जनारायण शर्मा- पीपापुर अयोध्या, पौष वैनी- समस्तीपुर तथा शाकम्भरकुमार वीरी खुर्द श्री फल किए गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसञ्ज्ञितः।३।
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्। अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।४।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५० — अमावास्या, पुरुषोत्तममास समाप्त

आज प्रमोदजी के साथ मन्नाबाबू के यहाँ उनकी पूजतांद में गया। जिसका चावल हाँगकाँग था। उनके यहाँ कुशल समाचार हुआ। अब स्वस्थ हैं चिन्तामुक्त हैं।

उनसे राजगुरुमठ के जिर्णोद्धार तथा प्रबन्धसमिति के गठन-विधि-विधान संशोधन आदि के संबन्ध में बातें हुई। महाधिवक्ता गंभीर विचारणा का विषय मानने के बाद निर्णय का है। प्रमोद से इस संबंध में मंत्रणा-सलाह-मशविरा चल रहा है।

डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा बाबू के विरुद्ध कार्यवाही ठहरी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्। यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।५।
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।६।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१ स्वामी मनीषानंदजी सरस्वती- योगिराज
को बहुत दुःख सम्भाव कि अभी एक शरीर है वह
कब तक कहीं जाएँ या वे मेरे खाँसी कोठी-मथुरागंज
जाने पर पुनः सम्भाव ठीक से मिलेंगे।

× × ×

वे अन्तर्पूर्ण से कहते थे कि साधु तो परमहंस है,
मानव धर्म करते थे। मरणासन्न में पड़े हैं फिर तक भर
खाने पूरी लेना फलफूल खाना- पहले भी कहते हुए
सुन सकते हैं। मेरा लोग वेष बदलकर यहाँ रहे हैं।
वीरभद्र ने भी विनोद से कहा था इसलिए कि
"प्रमोद के बाल बच्चों को स्वामीजी बहुत
मानते हैं"
मना कीजिये। मेरे लिये तो अन्यादि काल से एक
सेवा है। योगकार में लगा रहे- वही संत संन्यासी
है। संन्यासी को दुःख नहीं है।
त्याग-तपस्या से दुःख है। त्याग-तप नहीं है।
फूला अहंकार है तो वह दुःखरोग विशेष
पशु तुल्य है।

× × ×

जो मुझे अपमानित करके जाता है वह
स्वयं अपमानित होगा। उसे कहीं शान्ति तक
भी प्राप्ति नहीं होगी।

अपने लिये सुख चाहना आसुरी वृत्ति है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्।७।
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।८।

सूर्या० ५।२, सूर्या० ६।५१ उन्नमुखी सहित प्रमोद स्वरूप को ब्रह्मविद्यासु के प्रतीक शंकर सर्वनामीश्वर की तरह है- वो पुरुष्ये। मेरा मोद-आमोद अन्धकार के लिये विलुप्त सर्वशून्य सा है। प्रमोद के आगे कर जाने के बाद ईश्वर - नारायण है, व्यवस्था चलरही है।

बक्सर से श्री शिवशङ्कर राम-(सर्वेश्वर राम) आगये- पुत्री के विवाहोत्सव के खोजबीन में। श्री विद्याधर राम - बलिया के बड़े धोरेमहि - जो दुनियाभर के - व्यवहारपक्ष नीति में कर बनाकर रहते हैं। उनसे उम्र वाले अकड़ू रूप हैं।

उन्होंने कहा है कि मेरे बड़े भाई विद्याधर राम यदि कहेंगे तो मैं करूंगा।

अतः प्रमोद रूपके आकर - विद्याधर राम को उलाहना कहसमझा देना है कि उनका हुक्म है जाओ और व्यवस्था बैठ सके। परोपकार है।

x x x

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः । सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । ९ ।
प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ।१०।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

आज कुम्भलाके सुरेन्द्र राय शर्मा-
ग्राम ०प०- कलिकाता- पारिवारिक अमर्षी बच्चों
के चिकित्सार्थ आये। चिकित्सा चल रहे हैं।
लाभ मिलेगा।

जबतक स्वार्थ है, तभीतक सेवामें त्रुटि है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये।११।
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च। मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्।१२।

सूर्यो० ५।२, सूर्यो० ६।५२

आज रात में १० बजे हेराफेरी एवं
प्रेमनारायण - रमेश - मोज शादी के लिए में भाग
लेके कट गये। कमला बैठा गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्। १३।
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः। १४।

सूर्यो० ५।३, सूर्यो० ६।५२

आज श्री योगीन्द्रनाथ शर्मा
व० के रिश्तेदारी बनारसवाले रोहतक वापस गये।
पत्रादि हमने सम्भालकर रख लिये।

श्री त्रिलोकीनाथ के यहां से भोजन आया पर
रुचि नहीं रहने से खाया नहीं।
पड़ोसी को भोजन को भुलाकर दे दिया।
रात में दूध और छोड़ खाकर काम चलाया।
दूध त्रिलोकीनाथ का लड़का दे गया।

संयमहीन मनुष्य पशुके समान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्। नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।१५।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन। मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।१६।

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३ शुक्ल पक्षके सुदिनमें राम महाकी निष्फला सलाम नहीं पक्का फिरकी सलाह उपीका गाजीपुर भेजेगा।

कलियुगमें भगवन्नाम ही मुख्य साधन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ।१७।
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके ।१८।

सूर्या० ५।३, सूर्या० ६।५३ — रामप्रसाद आज भी नहीं आये। उनके आने तो कल शायद आयेंगे। आम पिलपुले का संगमा। दूध की खेर तथा अन्य खाकर अच्छा लगे बच्चे खुद बीमार पड़ गये। कुछ थोड़ी गलतफहमी थी। बाद में सुधारी।

भावीके लिये सब जगह द्वार है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे।१९।
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।२०।

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३ आज प्रमाद कमा (महित कमे चतुरुर्द्ध योग अपत कालेप आलीगपे। रवड्गाधाति शर्मी मीअ पंडुत्रे।

कुछ समय प्रतिदिन एकान्तमें बिताओ, मौन रहो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।२१।
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।२२।

सूर्यो० ५।३, सूर्यो० ६।५३ — आज श्री [illegible] जन्मपत्रिका [illegible] फल देखे
मूल्य ग्रा० संक्षिप्त की पांच प्रतियां मिली। [illegible]
इन्दौर का गत पर [illegible] वर्ष की आयु में [illegible]
में उनके निवास का देहावसान हो गया। अन्त्याष्टि में [illegible]
लोगों का [illegible] हो पहुंचना कठिन है।
आज सौरवर्ष १९ के [illegible] कुसंस्कार दृष्टि — [illegible]
से [illegible] में आई [illegible] शक्ति से [illegible]
[illegible]

देनेसे पानेका रास्ता खुलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः। प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ। २३।
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः। २४।

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

श्रीगङ्गा-दशहरा

कवस्था... बहुत बढ़ता जा रहा है। पैसे सम्मिल हैं। केसा रुपये पूजा - और कर्म बहुविध। साधुसंत कोई सहयोग नहीं देते, जनता पर भागते फिरते हैं। पेट के लिये वेष की मर्यादा बेचते हैं। एकमात्र सत्य। प्रमेय हमारा दीक्षित है। फाल्गुन कृष्ण: कर्म कृष्णे आदि में - लगभग दो सौ रुपये लगे। लिफाफे पोस्टकार्ड ग्यारह रुपये का लिया गया।

"पाक्षिकी" वैज्ञानिक पढ़ते रहे। इस अंक के कई निबंध महत्वपूर्ण हैं। यह संग्रहणीय अंक है। "अहल्या कड समाप्त" शीर्षक प्रति नमूने के रूपये अभिप्राय - पियपियाला प्रकाशन के कार्यालय को दी गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् । तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते । २५ ।
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते । एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः । २६ ।

सूर्यो० ५ । ४, सूर्या० ६ । ५३ — भीमसेनी, निर्जला एकादशीव्रत

आज बुधवार के जगत्पाद-सच्चिदानन्द-विष्णुनिरञ्जन
- श्री श्री १०८ श्री आद्य शंकराचार्य जयन्ती-पूजा आदि के लिये।
मुजफ्फरपुर कमिश्नर जनरल चन्द्रशेखर मिश्र की पत्नी का निधन
२८ जुलाई को ब्राह्मणों का तथा जातसमिति की
विचार गोष्ठी में भाग लेने के लिये बुलाया।

दूसरेके दुःखसे दुःखी होना सेवाका मूल है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप। अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि।३।
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः।४।

सूर्यो० ५।४, सूर्यो० ६।५३

आज बोकारो श्री उपेन्द्रनाथ जी को पत्र लिखा। श्री जुगलकिशोर बिड़ला को राजनवगढ़ की पटरानी डोरबनार पर रु. 5.00 के स्टाम्प कागज में दबाने के लिये पत्र लिखा। कर्मठ श्री कृष्ण राम, जगदेव (उ० राजकुमार राम) को उनके नौ मंजिला गायत्री भवन सेक्टर 19, फरीदाबाद (Y. 69) के पोस्ट "गीताहृदय" की 500 प्रतियों को, कहाँ लोटने के संबंध में पत्र लिखकर उल्लेख किया।

आज प्रातःकाल ही धन्यवाद सुधियान से नीचागढ़ के श्री विष्णुचंद राम, आ पहुँचे। कुशल समाचार हुआ। गोरखपुर जाने वाले हैं। शेष कथा मा० गा० छठमीटाले। पण्डाजी - प्रमोद जी के लिए मेरे से लिया - शेष लिखा एवं नटुपके दशहरा के पुत्र रीपी शर्मा से दिये। आज दशहरा रुक किलो - बारहवें में - लिया लेजाने। कुछ खुल जी को भोग लगाया।

खूंटी में राजेश भी मुझे पहुंची खाने - चाजकों के लिए कुछ रुपये दिया। मलेरिया की - नारी आज तक रुक गया किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः।५।
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्। तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय।६।

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

पूर्णिमा

आज प्रातः विद्यालय - गोरखपुर गया। मौकरूरी अवुरिकी पारेजपजी के यहां से आता हूं। कल ... के ... वानप्रस्थ के रूप में विजयकुमारजी को सकर्ठ विजयकर उनका समाचार जानना चाहा।

धर्मनियन्त्रित राजनीति ही आदर्श राष्ट्र बना सकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु। ९।
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते। १०।

सूर्यो० ५।५, सूर्यो० ६।५४ आज ५ बजे दिन में हरेराम प्रेमनारायण पीपुरसे लौटकर घर दिए आये। [illegible] नहीं उन्होंने पहले से मिथ्यात्व। जो समय आज्ञा गुरुवार कि किसी भी हरेराम लक्ष्मण वगैरह मंगलवार को आयेंगे। मैं [illegible] कि इसका अर्थ क्या है। उन्होंने कलकत्ता ईक्ष जाकर लोक किसकी खेती-बीसा आदि [illegible] अर्पित हुए गये।

आज ही मोतीवाला मिथिलेश कुमार राम बहुत - अपनी पत्नी - साहेबदास की धर्मपत्नी सहित आ पहुँचे।

प्रो: शारदा प्रसाद राय - बहुत ६०-७० आ गये। वे बहुत बातें [illegible] गये - [illegible] पीसहुये पूजा की उन्होंने।

× उसी समय थोड़ी देर पहले - बाबी मनीषानन्दजी हुए [illegible] संन्यासी - मध्यप्रदेश से [illegible] दाल ये बोरियों में ले आये। कलकत्ता विश्वनाथ के दिये। बहुत की पत्नी - बहुत [illegible] बैठे हैं।

यह दाल - कलकत्ता से [illegible] जी स्वामी - स्वयं उनको मिश्र समय [illegible] प्रयास से मिला।

× × ×

दाल तोड़कर धूप में [illegible] - बाद में कई उपयुक्त पात्रों में रखकर - घर में रख दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः। नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।५।
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा। बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत।६।
सूर्यो० ५।२२, सूर्यो० ६।४२ आज प्रमाद अधिक बढ़ गया मर्यादा टूटी।

स्वाध्यायमें प्रमाद मत करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्। ९।
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्।१०।

सूर्यो० ५।२३, सूर्यो० ६।४१ — कामदा एकादशीव्रत

आज श्री चन्द्रेश्वर मिश्र, पुत्र स्व० [illegible] के [illegible] गया। [illegible] पर अगाध श्रद्धा के साथ उपस्थित होने के लिये।

क्रोधका अवसर आनेपर चुप रह जाओ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्।१७।

सूर्यो० ५।२६, सूर्यो० ६।३७

आज डा० चंद्रेश्वर मिश्र, पीएमबी खोपंढ़ेगांव तथा रुद्रेश पाण्डे शर्मा, कलपुरा के आवश्यक पत्र लिखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव।४३।

सूर्या० ५।३८, सूर्या० ६।१९ —— **भौमप्रदोष** ——

परमा प्रकृति जब अपना अपना रूप त्यागकर
अस्तोन्मुख होती है और... बहुस्वाम ईच्छायीन
उसके अंग-अंग को सुडौलता देने लगते हैं, तो
उसकी संज्ञा दी जाती है - 'प्रधान' या महत्, या बुद्धि।
ऐसा है सांख्यों का मत है। वह मरीचा कन्या उनदश प्रेमेन्द्रों
को इसी भांति मिली जैसे अनेक पुरुष 'आत्माओं' को एक
' ' परमा प्रकृति अपने त्रिगुणात्मक रूप में - जाल में
ग्रहण करती है। इस प्रकार पुरुष अब पंचभूत ही नहीं,
उसकी जननी आद्या प्रकृति का उपासक बना। वह पंचसूती
कटिमेखला नहीं नहीं, त्रिसूत्र यज्ञोपवीत का भी धारक
हुआ जो उस मायाविनी के उन तीन गुणों, सत्, रज,
तम, के प्रतीक हैं। जिन्हें पुरुष को मायाजगत् में
रहकर स्वीकार करना पड़ता है।

" यही पुरुष जब संन्यास ग्रहण करता है तो
आधी रात को 'विरजा हवन' करके अपने पांच धागों
का कटिसूत्र और तीन धागों का यज्ञोपवीत तोड़कर
अग्नि-शिखा को समर्पित करता है और उस रात्रि में
ही कर्म बंधन, गुण बंधन, और माया-बंधन का त्याग करके
" ॐ " कार का जप करता हुआ अभिलक्षित दिशा में
वैराग्य हो जाता है।

—— o —— डा० कृपाराम पराशर के गहन चिन्तन
ग्रंथ - 'कालचक्र' से उद्धृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।४४।

सूर्या० ५।३८, सूर्या० ६।१०

"वैदिक साहित्य में 'अमृत' के दो अर्थ हैं, स्वभावगत और कालगत। स्वभावगत [illegible] अर्थ में 'अमृत' का अर्थ होता है अमरों (देवताओं) जैसी विकारहीन विशोका मनोभूमि। कालगत का अर्थ होता है मृत्युहीनता। मेरी समझ में उपनिषद में बारबार आया है कि 'इस ऐसा करो' या वैसा करो तो 'अमृत' हो जाओगे या अमृत मिलेगा, वह कालगत अर्थ में नहीं, स्वभावगत अर्थ में आया है।"

कवि जोधराज 'कामधेनु' पृष्ठ की पादटिप्पणी से —

[वैदिक साहित्य में] आर्यजीवन में दूध, घृत (सोम) इक्षु, जल और दही के साथ रस की धारा की धारणा की है।

"वैदिक-साहित्य में सूर्यकला, चन्द्रकला, नदी, गाय और वाणी के प्रसंग में 'अमृतधारा' 'धेनु' शब्द का प्रयोग करके वैदिक कवि ने प्राण और रस का उत्तमकाल उपस्थित किया है। ऋषियों ने सप्त रस धाराओं से परे एक आठवीं रस धारा 'ब्रह्मलोक' में विद्यमान है। वह है नारी और रति और काम सुख का आधार है। वरुण आदि की जटाओं वाले सिंहासन तेजस्वी कवियों के मन में 'काम' के प्रति किसी तरह की आसक्ति, अवकाश या रमणत्वेच्छा का दैन्य विद्यमान नहीं था। वे तो 'महत पद' जीवन को ही सुख मानते थे। वे 'महत' का भक्षण करते थे और फिर जठराग्नि 'अमृत' का पान करते थे। ऐसी उक्ति उनके काव्य में कही जाती है। जो सहज है, अमृत है, सम्मत है, वही काम के लिये सुरक्षा की या सेवा की भी तृषा या मदमाद के लिये उनके जीवन में स्थान नहीं था। अतः जल, दधि, घी, मधु, सोम और अन्न की स्थूल रस धाराएं ही उनकी दृष्टि में 'रस' की सप्त धाराएं रहीं और इन सातों को उन्होंने 'धेनु' [illegible] में [illegible] कर दिया।

अज्ञान हठकी जननी है।

RajGyan Trust, Jaipur, Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास।४५।

सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।९ — कुशोत्पाटिनी अमावास्या

परन्तु स्थूल रस-सुख तो स्वाद और आरोग्य है, इससे उत्कृष्ट है पुष्टि या रस जो मन और आत्मा से भी संपृक्त है, और इस उर्ध्वत सुख को उन्होंने 'धेनु' से संपृक्त किया, उसे 'सरस्वती' अर्थात् 'सरस्वती' मान कर।
परन्तु 'पुष्टि' या रस से भी ऊपर का सुख है, 'ईश्वरबोध' का आनन्द, जो सारे अस्तित्व को 'अमृतमय' कर देता है। इस बोध को भी 'धेनु' शब्द से संपृक्त करके 'धेनु' को देवत्व प्रदान करके, 'दुहिता रूपाणां', 'देवमाता अदिति' कहकर 'धेनु' की वंदना की गयी।
ऋग्वेद में प्रारंभ में कहा — 'जहाँ गायें हैं वहीं विष्णु का परमपद है। विष्णु के चरणामृत को पाने का स्थान है, विष्णु के चरणामृत को पाने का स्थान है गौ-समूह। आज भी विष्णु का चरणामृत बनाने में पंचद्रव्यों में तीन द्रव्य, दूध, दही और घृत हैं जो गाय से प्राप्त होते हैं।
बाद में गौ या धेनु की महानता का प्रतिपादन, 'अदिति', 'दुहिता रूपाणां' कहकर किया गया। फिर उसे 'ऊषा' के रूप में देखा गया — 'हे महान् गौ, जब तुम सुबह से आच्छादित होकर होती हो तो समुद्र (अंतरिक्ष) का 'अश्व' (सूर्य) तुम पर सवार हो जाता है।
यहाँ 'गौ' ऊषा है। अन्यत्र हम पाते हैं कि वैदिक ऋषि 'रात्रि धेनुम्' की चर्चा करता है अर्थात् रात्रि एक धेनु है। एक सहस्र धाराधेनु, एक सहस्र स्तनों वाली धेनु। कहीं कहीं पर कहा गया है कि एक-एक तारा एक-एक धेनु है।
यह महान् उन्नत कल्पना सदैव है। इसका अनुभव किसी रात्रि के एकान्त में आकाशगंगा की ओर देखकर हो जाता है। वे धन्य हैं, जो निर्धनता में भी दान करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते।४६।

सूर्यो० ५।३९, सूर्यो० ६।८ कपिगण और योगीजन अपने मानस-पात्र में ग्रहण करते हैं। ऋग्वेद के वाक् नाम' और यजुर्वेद पार करते हुए अथर्ववेद तक आते-आते 'गौ' या 'धेनु' ब्रह्मरूपी भगवती हो उठती है। अथर्ववेद में गौ के विश्वरूप का प्रतिपादन है, 'पुरुष-सूक्त' की शैली में। 'गौ' या 'धेनु' 'परमप्रकृति' की प्रतीक हो उठती है। गौ के अंग-प्रत्यंग में प्रजापति, इन्द्र, अग्नि, अर्यमा, धाता, विष्णु, महादेव आदि आदि का स्थान तो है ही, गौ के चलने में, ठहरने में, आदि क्रियाओं में भी देवताओं की अभिव्यक्ति है। गौ का बैठना उस स्थल पर निवास बन जाता है। अथीत् बैठी गौ 'अग्नि' है। बैठे बैलों की जोड़ी अश्विनी कुमार है। गौ पूर्व दिशा में उठ जाती है तो वह इन्द्र है, दक्षिण में यम, पश्चिम में वरुण है। खड़ी हुई गौ साक्षात् धाता है और उत्तर में सविता (अथर्व० ११।७)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः।१९।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते। श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।२०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः।१२।

सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ५।४८ — द्वितीया-तृतीया-श्राद्ध

प्रमोऽया (-अस्मीस्क कलाम) दो पूज्य पादस्वामी
सङ्कल्प स्वस्तिक का तैलमिश्रण कर्ता के क्रम में एक हैं?
जगद गुरु पदे पश्चात दे दिये गये।
चित्र कार हाँ। कुल छः तर्पण के हैं।

दूसरेके दुःखको कभी अपना सुख न बनावे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।१।
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत। क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम।२।

सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ५।४७ — श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चतुर्थी-श्राद्ध

स्वामीजी दक्षिणी दोलाल: भोजपुरी जनपद का आंशिक प्रूफ संशोधन के लिए दिया गया। प्रतिदिन दो घंटे लगाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् । स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु।३।
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः।४।

सूर्या० ५।४७, सूर्या० ५।४६ — पञ्चमी-श्राद्ध

आज परसा - रा० सत्संग के सम्बन्ध में शान्तिप्रसाद जी नरेन्द्र जी
रोर्द्र प्रतिपाल जी स्वामीनाथ तिवारी जी दो अलग अलग भेजूँगा।
प्रो० दीनानाथ एम० ओ० के पत्र पत्र भेजा।

भगवान्‌के मनकी होती रहे, यही अपनी चाह हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्। विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।२७।
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्। न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्।२८।

सूर्यो० ५।५३, सूर्यो० ५।३३

आज प्रातः काशिराजकार स्थित - जीमूत
रामपुर पहुँचे। रेलवे के मार्गपास - कालबीनीमाण
करपुरा और जिलवस से साढ़े आठ बजे - वकलउ आश्रमपर
पहुँचे।

संसार कर्मभूमि है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः। यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति।२९।
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति। तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा।३०।

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ५।३२ आज छठा श्री जी मंदिर क्षेत्रपुरागमन। जल पान किया तथा निवृत्ति के आश्रम पर गये। अमरजी की बस - बसस्टैंड मनापाल के साथ वाराणसी वाले सांकालदेजी। गाड़ी दो घंटे विलम्ब से आनेवाली थी। तीर्थ हमेशा की पाठशाला बच्चों के लिये खोलदिये। गाँव में आये मोजखेड़ी आगे किया।

रुद्रगायत्री आश्रम से पाठ हमेशा किसी को उधार काम में लिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते।३१।
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते।३२।

सूर्यो० ५।५४, सूर्यो० ५।३१

आज्ञा पत्र पृ० ९५ मेरे के पास मेरे नोपलब्ध
मथुरा - कटोरे। उन्हें पचास रुपये लेने मार्ग
लेकर रिकर आदि के भय में दिया।
सभी को हमेशा का मंगाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः। क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत।३३।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्।३४।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः।१३।

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ५।३०

आज श्री इन्द्रशील शर्मा डाक्टर को तथा पालो-जगमोहन रामसिंह दुर्ग कलेक्टर-कलेक्टरी को पत्र लिखा। श्री दिया लाल चौधरी रायपुर श्री रामकेश परसेन - बिलासपुर को भी पत्र लिखा। विठ्ठलनि-वालचंदी, नित्यानन्द महादेव मृदुल एवं मीना श्री दीदी भगवान का दौरा करने की योजना बिना एस्पी के है, आक्षण का काम होगा। योगेश्वर कृष्ण मुरारी होने महाकाल उज्जैन से काम लेना होगा।

शरीरके लिये संयम, पथ्य एवं औषधकी व्यवस्था रखनी ही चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्। यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः।१।
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः। सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च।२।

सूर्या० ५।५५, सूर्या० ५।२९ स्वामी जी का तैलचित्र बैठकखाना मण्डि में गया है। दो हार रूपये दिये गये हैं। कुछ और देना होगा।

आज स्वदेश बिहारी तिवारी बाबा की पुण्यतिथि आई। उनकी सहयोगिनी उनके भाई की कोई स्त्री भी लगभग 20 वर्ष तिवारी की पत्नी के समान रहकर गुजर गयीं थीं। पता-पता कि वानप्रस्थ सेवा सदन-अस्पताल में तिवारी जी ने दो समाधियाँ उनमें पटने के विद्यार्थी आते रहे कारण था, शायद हजार रुपये लगेंगे। कुछ किसी ने। इन लोगों पर श्रद्धा बहुत है।

१७.१०.९९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।५।
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्। सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ।६।

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२७

श्रीदुर्गाष्टमीव्रत

कल दिनांक से प्रमोद की माला अर्पित है, प्रयाग जाते समय अपनी संचित निधि को साथ लिये हुए गलकर बैठी है, श्रीराधेश्याम शर्मा को ये और मनोकामना पूरा करायेंगी। आज सिद्धों के मनोरथ पूरा हुआ है, सफल उन्हीं की हवेली में पहिला इतिहास है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ।७।
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ।८।

सूर्यो० ५।५७, सूर्यो० ५।२६ श्रीदुर्गा-नवमीव्रत

आज मेरे [illegible] से [illegible] पिछवाल से देवीदीन [illegible] पधारे। [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत। ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत। ९।
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत। रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा। १०।

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२५ विजयादशमी

आज पान मलोवाली दुकान २०० रुपये किराये की
सालाना ४० रुपये गंजन का बाकी हिसाब ए मन को दिया गया।
पर रुपये मिश्री को दे दिया। बच्चों लोगों को मिठाई
के लिये ४० रुपये दिये... गगदल वर्फी गंगाराम सभी
बच्चियों को बांटा गया। प्रमोद एवं उनकी पत्नी
को दिया गया। इस समय बच्चियों के हिस्से के
लिये दिया है।

× ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः। प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने यथावच्छृणु तान्यपि।१९।
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते। अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्।२०।
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्। वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्।२१।
सूर्यो० ६।३६, सूर्यो० ५।४

आज महामना मदन आदि के निकलने, पिता [illegible]
प्रसन्न हुए। श्रेष्ठ समाज की ओर से स्वामीजी को अभिनन्दन
अर्पित करने का निश्चय किया। आसाढ़ के दिन
[illegible] राजमंत्री उपस्थित [illegible]
पर सभा आयोजित थी।
[illegible] हुआ। [illegible] शाखी। [illegible]
आदि [illegible] लोग [illegible] को [illegible]
था। [illegible]
[illegible] मैं भी [illegible] अंत में आशीर्वाद के
नाम पर शाल [illegible] हुआ।
मैंने स्वयं कहा कि स्वामीजी [illegible]
में न उन्होंने [illegible] में [illegible] बनाया।
साथी [illegible] भी कहा कि एकजुटता को [illegible]
राष्ट्रीय [illegible] में [illegible] राष्ट्रपति [illegible]
[illegible] की [illegible] से [illegible]।
मैंने साथियों को [illegible]
[illegible] कथा भी [illegible] भेंट की।
[illegible] सिंह [illegible]
[illegible] तथा [illegible] मैं न [illegible]
[illegible] में [illegible] मैं न देखता हूँ
[illegible] आदर्शों [illegible]
[illegible] हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्। अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम्।२२।
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम्। अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते।२३।
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्कारेण वा पुनः। क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम्।२४।
सूर्यो० ६।३६, सूर्या० ५।४

श्रीरामविवाह

आज मैंने श्री-रामजी स्व गीता का विवरण दिया। पं० रामनाथ पाण्डेय जी ने भी विवरण के पश्चात् पाठ किया।

७० रुपये की दो बड़ी गीता-जयन्ती मंगाया अपने लिये एवं प्रसाद बनाने के लिए।

× ×

महंथ भवानी नंदन यति - इधिमा एकमात्र की गद्दी पर आसीन किये गये। धर्मिक बंदूक की बात है कि पुरातन परम्परा के लोग आज तक पूर्वजों के कार्यों को ढोते हैं। ओढ़ते हैं। जो लोग इसे प्राचीन ही नहीं मानते उन्हें गुरुपरम्परा का पालन करना आज भी आते हैं। विमुखी कुलरूप जैसे आये लोग इसी बात को ढोते हैं। बल्कि कल्पवास का कुछ लोग उन्हें दस वर्षों तक लोग स्वागत किया।

सच है कि राजनैतिक लोग भी यह कलंक का सामना करते हैं। महेश नगरी की ने तो अपने ही समय के लिये बोझ दिया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः । ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ।५२।
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् । विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ।५३।
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ।५४।

सूर्यो० ६।४२, सूर्यो० ५।९

'जगरण' - कला० - कला की कोई संदर्भ नहीं

कुछ दिनों से 'जागरण' प्रतिदिन तीन घण्टे गंगाजी पड़ता है। आज 'जागरण' शब्द आगे उन्होंने १० मिनट दिये। फ्रेंच कवि डा० नेपोलियन के दो पदों की कोटिशः का व्याख्या उन्होंने दी। पचास रुपये बुद्ध का प्रसाद रूप में लेकर कुल १०० रुपये मैंने मीरा को दे दिये।

× × ×

बनारस से चले अनिलकुमार 'शून्य' गंगातट गोविंद साहू के मेला-उपाध्यक्ष और किष्किन्धाकाण्ड होते सात बजे लोकार्पण पर पहुँचे। उनसे पाँच सौ रुपये इधर लिया। दो सौ रुपये वाहनों के प्रधानाध्यापक "सिकरे" को दिलवा कर भाड़ा गए।

रणजय धारी शर्मा ने उन्हें सेंट्रल बैंक बनारस से सून्य बैंक से बाब इकाई का चेक देना होगा।

२००० दो हजार रणजय धारी शर्मा के लिये कोई भी रकम के बदले, पाँच सौ शून्य का इयरमार्क। विजयी नाम के ६०० रुपये उक्त बनारस के कर्ज में शून्य ने दी देनी है।

गजाधर गंज अकबर के प्रतिष्ठित लाला के यहाँ इलाज कराने श्री रामदेव राय चाहे - रणजय धारी शर्मा को ही देखना है कि आश्रम की सम्पत्ति में लगायेंगे।

संसारमें सफलताकी पूजा होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः । ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ।५५।
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः । मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ।५६।
चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः । बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ।५७।
सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते॥ जय०
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि, तारिणि परमानन्दप्रदा॥ जय०
आसुरभाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी॥ जय०
समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥ जय०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Our English Publications

Code		Price	Postage
457	Shrimad Bhagavadgita—Tattva-Vivechani (*By Jayadayal Goyandka*) Detailed Commentary Pages 736	35.00	■ 8.00
458	Shrimad Bhagavadgita—Sadhak-Sanjivani (*By Swami Ramsukhdas*) (English Commentary) Pages 896	45.00	■ 8.00
455	Bhagavadgita (With Sanskrit Text and English Translation) Pocket size	4.00	■ 1.00
470	Bhagavadgita—Roman (With Sanskrit Text and English Translation)	10.00	■ 2.00
487	Gita Madhurya—English (*By Swami Ramsukhdas*) Pages 155	8.00	■ 1.00
452	Shrimad Valmiki Ramayana (With Sanskrit		
453	Text and English Translation) Set of 2 volumes	220.00	■ 25.00
456	Shri Ramacharitamanas (With Hindi Text and English Translation)	70.00	■ 8.50
786	Ramayan (Medium Size)	50.00	■ 6.00
564	Shrimad Bhagvat (With Sanskrit		
565	Text and English Translation) Set	150.00	■ 20.00
494	The Immanence of God (*By Madanmohan Malaviya*)	2.00	■ 1.00
783	Abortion Right or Wrong you decide?	2.00	▲ 1.00
	by Jayadayal Goyandka		
477	Gems of Truth [Vol. I] Pages 204	5.00	▲ 1.00
478	" [Vol. II]	5.00	▲ 1.00
479	Sure Steps to God-Realization	8.00	▲ 2.00
481	Welts of Clean & The Divine Bliss	1.50	▲ 1.00
482	What is Dharma? What is God?	1.00	▲ 1.00

Code		Price	Postage
480	Instructive Eleven Stories Pages 104	4.00	▲ 1.00
520	Secret of Jnana Yoga Pages 272	8.00	▲ 1.00
521	" " Prem Yoga " 184	6.00	▲ 1.00
522	" " Karma Yoga	7.00	▲ 2.00
523	" " Bhakti Yoga	7.50	▲ 2.00
658	Secrets of Gita	4.00	▲ 1.00
	by Hanuman Prasad Poddar		
484	Look Beyond the Veil	6.00	▲ 1.00
622	How to Attain Eternal Happiness ?	6.00	▲ 1.00
483	Turn to God	7.00	1.00
485	Path to Divinity	7.00	▲ 1.00
	by Swami Ramsukhdas		
498	In Search of Supreme Abode		
619	Ease in God-Realization	4.00	▲ 1.00
471	Benedictory Discourses	5.00	▲ 1.00
473	Art of Living	3.00	▲ 1.00
472	How to Lead A Household Life	3.50	▲ 1.00
620	The Divine Name and Its Practice	2.50	▲ 1.00
486	Wavelets of Bliss & the Divine Message	1.50	▲ 1.00
570	Let us Know the Truth		
638	Sahaj Sadhna	2.50	▲ 1.00
634	God Is Everything	3.00	▲ 1.00
621	Invaluable Advice	2.50	▲ 1.00
474	Be Good		
497	Truthfulness of Life		
476	How to be Self-Reliant	1.00	▲ 1.00
552	Way to Attain the Supreme Bliss	1.00	▲ 1.00
562	Ancient Idealism for Modemday Living	1.00	▲ 1.00

Subscribe our English Monthly

THE KALYANA-KALPATARU

"ADHYĀTMARĀMĀYAṆA NUMBER"

(Annual Subscription (Oct. to Sept.) Rs. 60.00

(Vol. XLIII No. 1 October 1998)

अब भी उपलब्ध है

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित

"कल्याण"

(भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार एवं साधन-सम्बन्धी मासिक पत्र)

'कल्याण' वर्ष ७२ (सन् १९९८ ई०) का विशेषाङ्क

"भगवल्लीला-अङ्क"

वार्षिक शुल्क रु० ८०.०० (सजिल्द रु० ९०.००) डाकखर्चसहित

स्वयं ग्राहक बनें—दूसरोंको ग्राहक बनावें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

श्री गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश' फोन नं० 34434
148. सिविल-लाइन, बरेली - पिन: 243001

Shri R. P. Singh (Advocate)
No-2, 1st Floor
Kavarma Building.
547 Kalvadevi Road.
Mumbai - 400002.

श्री प्रेमशङ्कर राय, प्रधानाचार्य
श्री प्रबल-ब्रह्म इन्टर-कॉलेज, अक्खहीं
गाजीपुर,

" " , सिद्धेश्वरनगर, गाजीपुर, लंका.

श्री कृष्णबिहारी शर्मा - फोन-निवास-
३०५५५५/
२०४४३७
" " "
प्रतिष्ठान → २०२८५८/२००२१
→ /२००२१

श्री समाजीत तिवारी →
कार्यालय फोन-३५२०११.
7 A.M. — 2 P.M.
दीनदयालु उपाध्याय अस्पताल.
पाण्डेपुर - चौराहा.
वाराणसी.

श्री सुरेन्द्रनाथराय, अधिशासी-अभियंता
सेक्टर-4F,
क्वार्टर नं० ठाना
बोकारो-स्टील-सिटी, बोकारो.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० सत्यनारायण शर्मा,
ग्राम — बमन गावाँ, बँगला
पोस्ट० — माधोपुर (पथ-धानापुर) कैंट
जिला — पटना, पिन 801503.

श्री हियालाल चौधरी,
फोन नं० 434666
कोड नं० 0641

प्रो० ध्रुवदेव शर्मी, अध्यक्ष, इतिहास-विभाग
कै० रा० इस्लामिया कॉलेज, सिवान
नोट - ~~संपर्क-कारिका, डा० राधाकृष्ण शर्मा~~
के लिए भेजनी है।

आचार्य → डा० ध्रुवदेव शर्मा
'हिरण-हाउस'
~~महादेवा, — मोती मध्य विद्यालय, एवं~~
~~कचहरी के निकट, सिवान.~~

श्री मदनमोहन शर्मा — ग्रा० बैरमपुर
पो० दुवरिया-केन्द्र-भभानियाँ
जि० - गाजीपुर.

× × ×

"सुभाषित रत्न-भाण्डागारम्"
प्रकाशक → मंशी राम-मनोहरलाल-
द्वारा मोतीलाल बनारसीदास.
या निर्णय सागर प्रकाशन
वाराणसी

रामजन्मभूमि का इतिहास - इतिहास.
पं० रामगोपाल पाण्डेय 'शारद'
श्री राम प्रिंटिंग-प्रेस
शास्त्री नगर, अयोध्या.
जि० फैजाबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पता :- डा० चंद्रेश्वर मिश्र. 263376(R)
प० डा० राम कृष्ण मिश्र. 260435(R)
एस० के० मेडिकल कॉलेज के दक्षिण. फोन-0621
जिला - मुजफ्फरपुर (उ० बिहार)

× × ×

श्री विजय नारायण मिश्र, बड़ी-पियरी
फोन नं० 351433
श्री राधा रमण पाराशर - फोन. 343175.
मलदहिया, वाराणसी

× × ×

श्री प्रकाश उदय द्वारा श्री सत्य प्रकाश त्रिपाठी
माँ कमला - निवास.
बी 37/191 म.
बिरदीपुर. वैजनाथ मंदिर के पास. वाराणसी

श्री लाल नारायण शर्मा.
बुद्धा - कालोनी
निगुयन - इस्पाहल 9 ली गुंज एपार्टमेन्ट के - बगल में.
पटना - 1.

श्री रण विजय कुमार
प० बजरंग बहादुर सिंह, (वकील)
पश्चिमी लोहानीपुर.
कदम कुआँ, पटना, उ.

R. P. Singh. Advocate.
No 2, 1st Floor. Kanchana Building.
547. Kalbadevi Road.
Kalbadevi Road.
Mumbai 400002.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Col. S. K. Rai (PRN-(0118)-532908
Sector No-19 Flat No- C-1-69
Nirda- Ghaziabad (U.P.)

"सुभाषित रत्न भाण्डागारम्"
प्रकाशक- द्वारा - मुंशीराम - मनोहरलाल पब्लिशर्स"
द्वारा- मोतीलाल एण्ड सन्स
का "विश्वविद्यालय प्रकाशन"

* * *

इस्लामिक सीक्ट आन इण्डियाज इन्डिपेन्डेन्स.
अबुल कलाम आजाद एक नया बुक
— डा० सैयदा सैयदन

* * *

रामजन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास
लेखक. रामगोपाल पाण्डेय 'शारद'
प्रकाशक — मनीराम प्रिंटिंग प्रेस,
शास्त्रीनगर,
जिला — फैजाबाद (उ.प्र०)
एक मोदक → तीन कुल चौदह चार हैं.

श्री जगन्नाथ सिंह — शिवचन्द्र सिंह जी
गोत्र — पराशर. — एक सरिया
मूल पुरुष - जगन्नाथ दीक्षित
स्वामी गोपालानन्द सरस्वती का पूर्वाश्रम परिचय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पता:—

डा० राम तवक्या शर्मा;

(पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग)

— पटना विश्वविद्यालय, पटना

" काइई- भवन "

" मेन-ककड़बाग रोड- राजेन्द्रनगर गुमटी →

— से पश्चिम "

पटना (बिहार)

श्री चौहार्या सिंह जी;

ग्राम- जगदेवपुर

पो० — काशीपुर-ध्व-

राजातला व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री जीतनारायण सिंहजी (वकील) 348595
अमीर बाजार 5 ₹9/133-₹

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"पुस्तक" 'मैं तुम्हें आजादी दूंगा'
लेखक - सन्य शकुन
प्रकाशक - 'सन्मार्ग-प्रकाशन'
16, यू० बी० बेरिया रोड
जवाहरनगर - नई दिल्ली -
मूल्य - १५०/-

श्री रामनारायण पाठक
SA 2/398-E 3K-2, वाराणसी दौलतपुर - पाण्डेयपुर
स्थायी पता - ग्राम - कुड़ी मोहनपुर, पो० - कुड़ी
जिला - वाराणसी दूरभाष - 586631 (P.P.)

डा० रघुवीर राय, ब्रुजइनक्लोम एक्टेशन
1, प्लाट नं० 45, पटिया - वाराणसी
दूरभाष 316206

डा० महेन्द्र कुमार राय, पचोरा - जौनपुर
स्थायी पता - बेला सुल्तानपुर, पो० सिमरी
जिला - मऊ। जमालपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2009 श्रीमती जनक दुलारी देवी
विधवा स्वर्गीय उमाशंकर सिंह
(अध्यक्ष/पक)
सराय गोवर्धन, चेतगंज
वाराणसी
रिक्त 5/6/2009

हरिद्वार चैतन्य

श्री नरेन्द्र जी अथवा - स्वामी नाथ तिवारी
विजय निकेतन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
कार्यालय, राजेन्द्र नगर,
पथ संख्या - 6E.
पटना
मोत - 673200

✓ श्री हरे कृष्ण पाण्डे
B-143
सेल सैटेलाइट कालोनी
पोस्ट पुर्वा
राँची - 4 - Ph- 409245

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Siddhi Trust, Funding by IKS MoE Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection